बनीयन । शक्षवयेकारन स्माद्त शिखारेकन मान । उम्ब ধি অ'ছিমামিপতিসলিধ না। সেই কালাবধি মোরহই তেছেমনে ৷ কিছুনাহিজানিআমিপতি গদবিনে ৷৷ অত এব আম রে আরতি করভমি।পরিক্ষ করিয়াজল আনি मिव वाभिना अञ्चनिनन्त्राभी बनिनव हम। विद्याद्वम (मट्ड देवन डाबना उर्थन ।। यनमायम् अभिवनकानियादन যান। নাপারিবকরিতে মায়েরঅপমান।। পরিকাকরি यू बनमाञ्चि पिचारन। ताथ, तकन छ उत्वम् । ठावतकमान এতেক্ষিচারবৈদ্য করি মনেমন। যশোদারে মিফী বাক্য করেনহারন। বৈদ্য বলৈ নাতা ভূমি পারিবেমানিতে। কিন্ত কিছু উপকার নাহবেতাহাতে ৷৷ মায়েতে ঔষ্থি দি লেনাহি ধরে জন। বুথা কেনখাপনিকরিবেপরি শ্রম।। ব্যাসকন বৈদ্যৰূপি প্ৰস্ত নারায়ণ ৷ অব্যথ্তাহার বাক্য नार्यथेखन ॥ उपवर्षिम्छ। दन अविधि परनमाय । नार्य (दारगद्रमा खनानिर्दानमध्य ।। यगमावरननव । भाउरविक रहेरव निज् छ किमीलयानि आरमर जय विरवारिय मुक्त बन नी ला चित्रकत्रमाउ । श्रामाकतिशादम श ब्रह्म वामठी ওক্রক্পায়ঝার জ্যোত্ষের্গুণে। চরাচরেযতেকজানি उनाहिखः न।। अउवनि गानिउन्निन रेक्पावत । विस करहिकवाचीरएउवचरभाष्ठद्र।। शशात ।। थे जिला संदेव में उन्हें बन कर ने वहने । शक्य विशिष्ट গুঝান একজন।। তারহন্তে অভিদ্ব যতন করিয়া। থড়ী।

वती (महेनीख तनीयनोग्रा। मखनशकतीया यह वत्र ভাবেতে ৷ উঠাবেসতারনামশিশুরথ ডিতে ৷৷ এতেক ও निम्न उदयउदगाश्य । शक्याम मुश्यिवात- १ वक्ता। जो बहर्ख अडो उरविषय उडका । देवक्शिनाता युग्बर्श बाद्राया । अथारनिष्युत कारंज्य छोचन वर्षा अथाय अ वकत थंछीटा निशीता। वाप्राकत खेठीन वनीन देवमावत । जाहाधतीनाममस्वक्रहशद्रान्तत ॥ (कह वर्ष उमावजो किर बलाविक । बुक्रवीना मीनोबमम् अबीबम को ।। (इनमाज्यकावामीयङ्गामन्य। देवप्रवदन हेराब মধ্যেকে বেহুনয়। পুনর্কারজপেতেবদীলা মহাশয়। শী শরপড়ীতেআসীআকার যোগায় ধকারে আক র দীলে बानकर्रेक रेवम् उदान वाम् ।। क्रब भवादमी नोले ।। उद नत्वताबादम्याञ्चाञ्चाक द्वावाधाविद्वनवनाम वदनदेव मुङ्गातन।। यमावनवाथानाम (कनमीनवाप। क्वकनकी नी वनाचारहजात वाम अहेरहज्जाधानाम (कहनाहीकस वाउवनी बाब बार शहरम् वक्तन । या बाब बानी म देवन थड़ी क्टियाखना। त्राधाणक देश्वयमो अकाखमावन ।देवमाव ब्बाबहेबात देशन नोक्रशन । युन्नाबदनकाननात्रो त शाना म पदत । जाकात कालाज व न्यावन व्यानकात ।।। इन्हीं मा जहाना पृणा दीया वीत्याहोनी। हिर्म क्षापादारम् मुख्याज्योनी।। ९अन गक्षन सको शको युकाजाय।

दिहास्क बाशास्त्रदाक दिशास्त्रत मारा। अहेकाल (यहे

নারী সেইসাদ্ধা নতি কেশ সেত্রপারহতেতাহারিসকাত সে রমণিকৃপা করিআনিদেয়বারি। তবেনন্দস্তেআমি वाहाइटेंड शाति ॥ এउयमि देवम् वत्रविनवहन । स्वन চমকিত देश्न मदाकात्यम ॥ माथ्याकमक्राव्यवाद्युजा वानी। अत्रिन्तलारकर्जनत्वकरत्कानाकानि॥ कृष्कन কিৰা রাধান্তগতেষোয়ণ।। তাছারের নয়েনতী কেমনগ नाय दिना अदिनाष्ट्रिना (क्टेमाथा कति। त्राथानाम स्विन थनोक्रिन मिहति ।! व्यवः तत्रमध्य । व्यविक क्रिन कं थंडरतरेवप्रवदत्रकिरंडनाशिन ॥ जानारंशरेवप्रजान ভালতবণ্ডণ ৷ এবয়দেএতণ্ড: ণহয়েছানপুণ ৷৷ নালানিবা চিলেকনবাড়িবেকআর । সিথিয়াছ্যারকাছে ত রেনম স্বার ।। হাসিপায় লাজেমরি একথা শুনিয়া। রাধিকা হ हैन मजीथि फिरजगिया।। वृक्षमारका नाती मरश्वकनिक्रमी (यह। जामात्रगण्यवाद्यमजीदेहन (मह।। (इनम्राज देव: प्रथमि नित्म वङ् छत्। हेयमहानियादिका करत्ने खत्।। (कनरभा अधिनाख्यिहाल करिक्छ। यिहात। पक রিকেন কোন্দলবাড়াও। ক্লামিত অবেপবৈদ্যগুণহীন অতি। আপাদতোপে সলেতে আছ্বড়সতী ।। ধানিয়া ছেদকলেতেতোমার্যেকায । বা্কাম্থেকথাকছ নাছি बामनाख ।। এउद्यक्तिवनवत्रक्तिनात्त्रवरंन । श्वनिद्याजा हातवानी पुनादकाध्यकतनाथना गन्न (शरदायन मनना मा.

মুক্তালতাবলি 11 42 তিল ৷ হাতন ড়া দিয়া বৈদ্যে গালিআরম্ভিল ৷৷ পাড়েয়ে অশ্প্রগালি মুথে যতআইসে। শুনিয়াসভাস্থ লোক সকলেতে হাদে ৷৷ তবেত্যশোদা রাণীবিষমদে থিয়া ৷ ল টিলারহাতে ধরেআপনিউঠিয়া।। রাণীবলেল টি লাগো ক্ষাকর মোরে ৷ আমার ম থার,কিরাসভত তোমারে ৷ পিরপদেতেদ্দকর শাহয়উচিত ৷ নালমণি ব চেযাতেকরতার হিত ৷৷ রাধিকাইইলেসতী ক্ষতিকি বাতায়। তোমার ঘরেরবধ্ অন্যতদেনয়।। এতবলিঞ্ िनाद्य निवय कित्रा। वाधिकानिक्टिवानी ठलिन था ইয়া৷৷ দ্বিজকবি ইত্যাদি ত্রিপদা ৷৷ রাধিকা যদ্যপিসতীহর্ষিত যশমতী দৃত্র তিরাধ ক ভেগিয়া। দ্টিকরকরেদিয়ে কছেনকাতরাছ (यः क्रिमाण वृक्छान् विया। खिम धना श्रनावछीः व खमारक ভिममजीशैवमातास गिया विल्ल । स्कर्णे उ শুনিয়াছঃ তবে কেন বসিয়াছঃকৃপাকরিউ ঠিতেহইল ৷৷ করিয়া দেওপরাক্ষঃ দেখাও সতীত্রদীক্ষানিকাকরুক বু

প্যারিবলে কি করিলে হরি একিমার ঘটাইলেদায়। তবশোকেপ্রাণ যায়; দায়েরউপরে দায়ঃ ইথে আমিকি

खित्रवम् जि । वाँ छ । अक्रकत शानः विविधासकत्वानः ता

থ মাংগা জগতেথেয়াতি এইরু:পনন্দরাণী রা ধকারে কনবাণীঃ শুনিরাধালোম ঞশরীর ৷৷ অন্তরেহইলভয়ঃ

य थवाका नाकु त्रम प्रहे ह क यनवरह नी त ।। भरनर ताथा

कि डिशाशा अरकेक कि नी वर्णः जारक्य मि शिशा करना ভপার হইতে নাপারি। অধিককলক্ষহবেঃ লোকেমৃথনা দেখিবে কেমনে বাঁচিবভবেছরি ৷৷ ভামপ্রভৃবিষকভাবি ষের বিপদহত।বিষ্কাতাবিধাতাপ্রবর।তবপদ্যেইয রে তাছার্বিপদহরেঃ বিপত্যভঞ্জন নামধর : ভাকৃষ্ণ ক রুণ নিক্ষু অগতের প্রাণবন্ধুরাধিকাছ্দয় ইন্দুন্যাম তোমার চরণবিনেঃ নাহিজানি অন্যজনে তবেকেনবাড় য়ে দুনাম।৷ এইকপেরাধাসতীভাবিয়াঝাললাঅতি দু हेठ क वातियात्रावया। दिनकाटनकमिनोः खनित्नम देव ববাণীঃ আরকেহন্ত নিতে নাপায় ৷৷ কি কারণেভাবরা ধঃ ত্মিকৃষ্ণ অক্ষাধঃআদ্যাশজিময়িসনাতনী।কেনত ব এগ্রুল তুমি সকলেরমূল সতী রাধাসতি পরায়ণী ৷ উঠ উঠওগোপ্যারি মেত্রপরিকাকরি যমুনা হইতেখা नवाती। (नब्दन 'खेषवां खानथा ख्याहेव। अखहरनः (हज তন করাও তবছরি।। একুপ আকাশ বাণীং আপনকন্তে তেশুনিঃ আনন্দিত কিঞ্চিৎ হৃদয় তেথাপিসভয়মনঃভা বেরাধেঅনুক্ষণঃ কি ষ্টিতে কিলানি কিহয় ৷৷ ভাবিয়া हि खिश्राधनीः इत्र जावि हक्त भाषिः यगपादत्रकन मृ मुखदा । তোমারহিতেরহেতপরীকা লইবদেতঃ শেবেমমভাগ্যে याहाक्दत्र ॥ अन्दर्भाजामाद्रकहें भत्रीकाद्यक्षीहहेवा ६ চयमि (ভाষার नम्मन । जः दरन आजिद किरद्र : नज् दायश बानोद्ध रन्हेकरण उडिवस वन ॥ श्रीम्श्रीयनाम्क्य ३८क

নরাধেভাবভয় প্রী চরিকেক রতেচেতন। তাহাকি ভুলে ছপ্যারি যথন অরুপাহরিরুপ ধ্রায়েছনিভগুণে।। শু

নশূন ইত্যদি অথ শ্রীমতীরসেত্ত পরীক্ষা ধীকার।।

প্রার । প্রতাকরেনযদি পরাক্ষা স্থাকার। যশদার

আনক্রে নাহিপারাবার ।। করেতে ধরিয়ারাণীকরেন বিনয়। উঠমাগোশাঘুকরি বিলম্বনাসয়। তবেতরাধি

কাসতী রাণী আখানিয়া। আপনারস্থীস্বেক্ছেন ডা কিয়া। শুনিয়া সঞ্জিনীগণ আনন্দিত্যন। বৃন্দাক্ছেবি

লখেতেনাহি প্রয়োজন।। রাইবলেসঞ্চেল্যতস্চ্চরী। পরীক্ষাকরিব আমি কৃষ্ণনাম্মার।। তাহে যদিভগ্রা

ন করেনরক্ষণ। তবেলেআমারেপ্নপাবে দরশন।। নছে তথ্যনাজলে তেয়াগিব প্রাণ। বিদায় হইন অ মি তো

মাসবাস্থান ।। বৃদ্দাকহেকমলিনীভাব অকারণ। যাত্রা কালেক্সর ভূমি জ্রীমধুসুদন ।। কৃষ্ণনাম বলে ভ্রমির্ক্ বণার। যমুনাইইতেপারকিভাবনাভার।বৃদ্দেরবচনেরা

বেহর যিতহৈয়া। উচিত্রনদৃতগতি জ্বিকরিশারিয়া।। ও কাজন চরণে করেপ্রণিপাত। হেনকলে জটিলাউচিয়া

গরেহাত। কোথাযাও কমলিনানামহাসাইতে। আমি হনসভীঠেকিয়াছি পরীক্ষাতে।যদিব্লকবিরাজ করেছে

्नम । সকলি আলিকভ শুবৈ দেৱে । व व म ।। विष्ठ न व्हि अहे

मुकान जाव नि।। (ब्हें। कनरक अर्धान। व्यामिया एक (भाशक्रान पिट क् नका লি।। কেকোথা প্রভায় করে ভণ্ডেরবচনে। আপনারস্থ मिक्था वाश्रनित्रयात्ना खिम्गाम कन सिनी सान ज्यान (म। পরীক্ষ:कরিতে যাহকেমনসাহসে। পরীক্ষাতেঠে किल इट्रविপরोट। ভ্বনভরিয়া হবেকল স্বিদিত।। अक्टिजिमार्यात कि मुधनारमधा है। दिनर भरीका क तिया कारो। नारे। अठयमि क्रिना किन वात्वात। 🗐 রাধার মৃথে বাক্যনাহি সরেআর ।। জ টিলার জ্বচনে न्त्राह्यात्वमना। विजिल्लनक्रमलिनीक्रयक्त्रमना। प्रकृत्क সরে। अ शृथ्यिमिण्यभोत । अश्यानत्र एत भारत क्व হেনীরাতাহ দেখি বৃন্দাদৃতীঅন্ত রক্ষয়। জাটিলার প্রতি কোপে কহিছেভৎ সিয়া।৷ শ্নগোজটিল তিমিব ए व क्रिम के। वित्रकानवाशनाद्ववनाहेरमम्बी।। ताथा कनिक्नो खिमाधी পতिव्छ।। चम्राम शकानम्ब किन লবিধ তা ।। সেমব দতীত্বপনা ছইলবি দিত। তথাপি ক ছিতে কথানাহওলজ্জিত।। আগুছিদ্ঢাকিয়া পরছিদ্ চাও। পরছিপুসা হেত এতপরিতাপপাও।। রাধারের ইতেমানাকর কিকারণে ৷ যেজন যেমনসতীজানেনিভজ বে।। অবশ্য অীমতারাধাসতীসারোজার। নাছলে পা রীকাকেন করিবেখাকার ৷৷ এতয়দি বৃন্দাবলে জটিলা (तरहरम् । উঠिनक् हिनाधनी अधिक कलिएम । कार्धिव

न्मागर् वृन्म कदिए नाशिन। जारापिश नन्मतानी श्र-

मृकानठावनि ॥

काप्शिवन ।। यि जिनानिकारे शिया करहनम् तानी । मास नाक्तरम के ठिलामात निक्नो ॥ यपि तापाशास्त्रव्य ইংখ किवाकि । তোমারি বরের বধুতো মারি শৃখ্যা তি।। অনুমতি দেহতমি ডাকিয়ারাধায়। জলআনি বা हाहेर्य बामाव उन्य । ध्रममाव बन्द्रात्य य हिनाजि ठे সা। বনাইলন্স টিলার হাতেতে ধরি যা।। বিজারে যশদা त्रानी जालनिवनाय। अहेक्रल डेड्टयत हन्दिनवादय।। ষ্টিলা রাধার প্রতি করে অনুমতি।। যদ্যপি পার হত ল আনমো শ্ৰীমতী ৷৷ একথা শ্ৰিয়া প্যারীত্যিত হইয়া উতিলেনপুনরায় 'শীহরিশরিয়া আগেতে প্রণামকরেষ টিলারপায় তোর পদে প্রামল রাণীয়শোদ য়।। তদ জ্ঞেপ্রণাম করিয়ত গুরুজন। সমযোগ্যজনে কন বিনয় বচন।। জা টলারহাতে ধরিকধেনমিনতি। স্বাকারকা (इटिकारहनवान् निकार अकरनमास्य विक्त करत्वा भी क्षाम ।। (कदन व्ह िन । मत्नि छ विवास ।। क्ष्य व मार्थ । তার রহে হলাহল।মে)থিক বচনেতথাগড়েয়েমঙ্গল।। क्काल नकलाउकद्व द्यापनि। उद्य कलाउ हल

অথ জীমতীর ঘৃদ্নায় গমন। ধ্যা।। অলেযাইজীমধ্র শুদ্ন। আদিয়াদাদীরের কাক

त नोतायन ॥ তোমात्रविष्ट्रमानल स्नितात सङ्ग अल् देवमावाका याहेसलहित्सलत कात्रन ॥ भ्यास्त्र स्त्रीका

बाधाक्यनिनी।

क्रि बानि शांति वातिः उरव म बामिव कितिः नरनर ত जिय कीयन। अनर नाताश्य थहे मन निर्वपनः वास যেন ওচরণ নাহই বর্জন।।

পয়ার ৷৷ একে২ দকলের অনুমতি লয়ে ৷ চলিলেন হরিপ্রিয়া হরিকে মারিয়ে ৷৷ গজেল গমনে গতি ককে কেমঝার। ট্রদিগে চক্রকরি চলে সহচরি ।। হইল অপ র্ম শোভা কতকবতায়। চন্দ্রের মণ্ডল যেন ভূমেতে উদ य ।। बीमजीतमथ हजनिक्षिण गर्व । मधीशन मर्वजाह চন্ডের সোসর।। একত্রমিলনে যেন হৈলচ্জময়। ছে রিয়া সকললোক অনিমিক্ছয় ৷৷ এমতী জীমতী সতী চলেন তথন। পথ মধ্যে হয় কত শৃতদরশন। দক্ষিণে গোমৃগ দিল অতি শৃভকারি ৷ বামভাগে পৃত্ত সম্ভ কক্ষে क्लंगाती। नम् य्था नरताक मुर्थि (करतम नज्ता। येक्षा বেছার করে কমল উপর। কতমত শুভ পথে দেথেকত আর ৷ একে২ নামকত লইব ভাছার ৷৷ শৃভদ্যেট অভি শয় হর্ষিত্মন। মনে২ আরে রাধে শীহরি চরণ।। হে নমতে স্থি সহ জান্ধিরেই ৷ কতক্ষণে উত্তরিলা ব্যুক্ র ত'রে ৷৷ পুর্বাবধি ঘতলোক আছিলতথায় ৷৷ ছেরিয়া রাধার রূপ দবে মোহযায়। একদীফৌনকলেতে নিরীক १ कर्ता अन्यान करत्नजो हरव' अ मुन्दती। अहे अनहहे তে পারিবেনেভ্রমার। কেহবলে যে হয়দেথিবএইবার এইব্রপে পরস্পরকরে কানাক পি। এথা স্থিদ্ কথা

मकान जावनि ॥ कन कमलिनी ।। कुलारत চाहिया भारति वरलन मर्खेत শ्र र शिशंत्रयो व यात উত্তর ।। পরীক্ষা করিব আমি कि सानि कि इस । यपि शतीक स रहेकि सदिव नि केस ।। म्लाकारल (पर्था नाइहेल क्कारन। चल्य नर्थाचामि कति शाष्ट्रियरन ।। जानकतिशृक्षिव मित्रिक इत्र । उदं আমি পরীকায়করিবগমন।। বৃন্দাবলৈওগোরাধাভাব व्यकात्म। ज विक्या व्यवाश वंशं कात्म।। (महेक्क দেইরাধা ইথে নাহিআন। করহ উচিত তব্যেহয় বিধা ন।। পরীক্ষা য় তোম রে কে ঠেকাইতেপারে। অসারবচ ন কেন ভাবি চমন্তরে ৷৷ রাইবলে কৃষ্ণচন্দ্র জগতমাধার অসার সংসার মাত্রহরি নামসার ।। এতবলি ততক্ষণে নামিয়ন্নায়। ্বান করি বলিলেন হরির পূজায়।। মান সেতে যথাবিধি করিয়া প্রন। তপসাঞ্চ করি পরে ক রেন স্তবন ৷৷ শীমতী করেন স্ত তি শীহরিচরণে ৷ শীদ্গা श्रमाह दल अन नर्वहरन ॥ অথ শ্রীমর্তার শ্রীক্ষের স্তু তি করেন ৷৷ बिशमी।। काउरत किः भातिकयः काथ कृष कृशाम य কোনভেত্ত হৈলে অচেতন। কেব্ৰে তোমার কথাত্তিমি

कान उत्तम्याः मर्वधारे खिम महत्वन ।। उत्तर्कन (इन

ভাব্য ভাবিয়া নাপাইভাব্য তবভাবনা অনীত ৷ ভাষিছে চৈতন্যৰূপ্য যিদানন্দ্চিৎস্বৰূপ চিদাভ,ষ্চিদাঅনিশিচ

ত। পরমপবিজবিভূপ্রকৃতির পরপ্রভঃপরমাতামাপুনি

কাকার। লীলাহেন্ত অবভরি; ধক্তি অাশ্রয় করিঃ হইয়া ছ জাপনি দাকার।। নিত্যানন্দ ভ্রমিশ্যামঃনিত্যদে হ নিত্যানাম; নিত্য ভবধাম বিন্দাবন ৷৷ নিত্য রাধা ক রিমারেঃ নিডারুপ প্রেমভেরেঃ নিত্যভাবেকরেছবন্ধ না৷ নিতৃ বাকে গুনর হরিঃ বলেছনি শ্চয় করিঃরাধাছাড়ানা ছওকথন। শিত্যসূথ বৃন্দাবন; নাছিছাড় একক্ষণ: ভবে কেন হইল এমন ৷৷ তোমার বিচ্ছেদ্বাণে বিদ্ধাহতেছি প্রাণ্টেরিছিত ব্রিতেকিছনারী । বিশ্বানিয়া বৈদ্যবা ণীঃ বিষমপরীক। সানি আঁসিয়াছি লইবারে বারি। কি স্তমনেকারভয়ঃ কিঘটিতে কিবাহয় কলেবর কাঁপেভাব नाया अ दिनाकद्वन(पायो कालकन(स्वत काँ यिनपारम्य वामात्रभनाय ।। (मरमात्रकन इनस करम्र (यनत्रः का লাপরিবাদ নিত্যভাবে। কালার চরণেমনেঃ রছেযেনপ্র जिक्क नः करन्क नात्र रह्य न । जार्य छन अरह काला हा पणी রেধরিতব্বাদ তাহেকিছ্ভয়নাহিমনে। পরীক্ষায় ঠে कियमि (मारक करत अशवामी अशवाभी हव अहतरन ॥ अ हेट्डिनिट्यम्नज्यशंदम नातास्य यपि जानवाम मानीव (न। उदक्रश्कानमाम जायाकरशक्ष विनिष्धारम्ह य भ्नात् बंदन ॥ य छ कत्र वाशिठात्त याहैवामि (मछभा রেওচরণেকরিয়া প্রণাম। পরীক্ষ যুক্তভরিয়াযমনারজ লনিয়াতে মার চেতনকরি শ্যাম ৷৷ আশুআক্ত করছরি

৯০ মক্তালতাবলি ৷৷

বিলম্ব ছইতে মরিবিচ্ছেদেতেপ্রাণবাহিরায়। এইরুপ্রের রাধানতীক্ষেরকরেন ভূতিকৃষ্ণচন্দ্রইলাউদয়। জ্বীদু প্রসাদকর রাধাকৃষ্ণ ভিল্লনয় একতনু একসেজীবন। লীলা ছেত্তঅবতারলীলাকরেঅনিবারভাবমনযুগলচরণ

वाना (रख्यवजातनानाक द्रयानवात जाव सम्युगन हत्र प्राया कर्म विश्व हा सा क्रिंग ।

व्य विश्व हा सा क्ष्म हा सा क्ष्म हिल्ला ।

व्य विश्व हा सा क्ष्म हा सा ना हा सा ना हिल्ला । यथा सिक्ला दिखा गामन कि दिखा सा हे ने प्रत मन ।। ए थि सिक्त हा सा विश्व हा सा हे ने प्रत मन ।। ए थि सिक्त हा सा विश्व हा सा है ने प्रत मन ।। ए थि सिक्त हा सा विश्व हा सा है ने प्रत मन ।। ए थि सिक्त हा सा विश्व हा सा हो सिक्त हो सा है ने प्रत मन । य सिक्त हो सा विश्व हो सा है ने प्रत मन । य सिक्त हो सिक्त

ला। गल्युम्भहात क्षिणां जाज्यस्य स्वापाद्य स्

মুন ইব্লিতেরাধারেচাহিয়াহাসে।। তরক্তরলেপবনছি ल्लाद्यालियां किवाजारम ।। (एतियाकियां वीजाव তেপাশরিধরি২ মনেকরে ৷ ধরিবারেচার অন্তরেতেধায় তর ফল হরি ভরে । এইরুপেভাদে; ক্ণণে কাছে আদেকরে দ রগতি। কতভাবেথেলে যম্নাশলীলে রাধানহ রাধাপা তি ৷৷ তবৈকতক্ষণে রাখাপেয়ে জ্ঞানে ভাবেন বাঞ্ছাপু बील। ছाয়। करणहर्ति यानि प्याक्तियामात्त्र (प्यास **दिन ।। ভাবিকম निर्देश एपा एपा निर्धाय करा निर्देश करा ।।** र्तिप्यायस वाधिठारत क्स मानावाञ्चानिक्रिक्र ।। न ক্ষেত্র বিয়াঅচ্যুদে পুরিয়া পুন করিপ্রণিপাত।। চলি লা ব্রিতেপরীকা করিতে বৃন্দারপরিয়া হাত ৷৷ ঘিত্রৰ রভাষে: মনের উল্লাশে শ্রীমতীরপদ রজে। বিলম্বকরণ। ভগোচজাননা কৃষ্ণ শোকে ব্ৰ মছে ৷৷

অথ জীমতার সেত পারহওন।

थंगा।। अय अय अविकृष्णकण्य। कानज्य अखकाती किल्माती वहव।1

পয়ার ৷৷ সথী করে ধরি পগারী গিয়া সেই স্থানে ৷ ছে রিয়াআশ্চাষ্ট্য দেত্তচমৎকার মানে ॥ কেশদেত্তবিদ্য भारन-र्वे जाविनी। क्राया फ्क्रिकिष्ट् क्र क्र काहिनी শুন্থ ওছে সেত ভূমিধ্মময় ৷ তব পরীক্ষাতে পাপ প ণ্য প্রকাশয় 11 ভোমার মহিমা আমি কিবলিতে পারি সহজেমবলাজাতিতাহেগোপনারী।এইনিবেদনকরিতো

मङानज्यनि॥ 23 মারবিদিতার্যাদ মোল পাপকোন থাকেরতি মতি।কৌ নপাপনাহি থাকেষাদিছই দতীাতবে ভাষি কেশনেত্ৰজ न्यर्थ। याशन यर्व जर याशनि (मथा था। এতব नि কমলিনী সেত্ত প্রণলিয়াশ্ভবস্তের (হ্মঝারি কক্ষেতেল ইয়া। গলেজ নিন্দিয়া অতি ধিরে২ গতি। সেতর উপ রে পদ তলে দিলা সতী।। প্রথমেতেবামপদ্রয়মনতলি ল। একদ্টেলোক সবে চাহিয়ারছিল। সভাপরসনে সেত্ৰজু সমহয় ক্ৰেডেদ্ফিণ পদ্যারোপালাতায় ৷৷ क्षिणाल्य विद्या हाले ना हाला हा सार्वा । हम कात मानिमाव करत छत्रभ्नि।। वितिया चक्छ कमा करत कानाइन। स सर नक्ष रसमहा छेल्दत्व ।। यानटन्दर्श छात्रत्राथा खन गाया किह्नाटि किह्हारमकिह्वादाकाया उदन मामन (थानक अञानका नि। निकार छती खती ने १ थघ छ। वोगा वाणा। अधिक अधिक वामा दिक करत्र भगना (यक श्वा नन्द्रवा वानायाद्योगा। यात्रे उपुक्षविवामाकरत (म्यत्र १। व्याया विकास दिवत १ म्या विषय ।। व्याकाम इहेरज्य

পারিজাত মালাপড়ে রাধিকারগলে। বিধিধ সূগিরিকু ল পড়েব ভুমুলে।। ম গুড়মালতীমালে হৈলমোলিস্ ল। চরণকমলেপড়ে অমলকমল।। সেভপরে ধুগ ফুলে রাধিকাশোভিল। কমল কাননে যেনকমূল উরিল।। চঞ্চ ল চরণেপ্যারী চলে অনিবার। যমুনাইল পার একশ

एक विनवात कृत। कृत्वर्ण क्ष्मण्डी यम्नात पुक्रमा।

जिवात्रभातिक्त देवमावत्रवानी। मञ्चात्रभातिक्तत्राथा বিনোদনী।। তবে সেউহৈতে রাধানামিয়াত্ররিতে। ল हैन। यम्नाकन शृतिया सात्रित्छ ।। कत्क्किति दमहेवादिक निनामुन्द्री ।। চারিদিগে ঘেরিয়াচলিলসহরি ।। আৰ ন্দেতে উত্তরিল নন্দের ভবন। দেখিখন্য শব্দকরে সর্ব कन्।। य ठाले दहकन व्याप्त महर्त्वा द्वारा । य काव नियाउ কেশ'সভ পার হয়।৷ সেমতে এম ত কিছ নাচিভাবআ ন । সতীত্রপরাক্ষা মাত্র উভয়ঃ মান ।। যদিবল দইমত দেখিশাস্ত্রমতে ৷ কিবানত্য কিবামিথ্যা ব ঝিবেকিমতে উভয়ত সত্যজান।কিছমিথ্যা নয়। ক ল গহ র ধাক্ক অবতার হয় ৷৷ যে কলপে যেমনকুপেথেলে নারায়ণ ৷ যোগেতে জানিয়া শাস্ত্রে লেথে ঋষিগণা অভএব শ্বাবা ক্য কভ মিথ্যানয়। একণেশুনহপুনযেরপ তথায়।। রা ধাসত্বিলে সূবে করে নমক রাবৃন্দাবনেরাধাসম সতী নাহিআর ।। রাধাকলন্ধিণী সদাবলিত যাহারা। সভী বলি আসিয়া প্রণাম করেতারা ৷৷ সেইছৈতেঘ্টেগেলক लिक्नीनाम । जात्रिकलक्ष्यात्कल प्रयात्रभाम ।। वा थामजीवरन ट्रेंग (ग.अरन, घ.यंगा। चंडःशत्र स्वन मद শীহরি চেতনা !!

वाथ बीक्षाइ (एडन-।

পয়ার ।। ভললয়েরাধাসতী যদ্যপি আইল। দেচে থ্ লিকবিরাজ মছে যধিদিল। শ্রীমতী ঔষধিলয়েকরিয়া यान । यश्चे थाल (नहें बाल खाल करने ।। किक कार यर्थ थन वित मानाम् था। किन के विश्व किन के विवास के वित्र के विश्व किन के वित्र के विश्व किन के वित्र के विश्व के विश्

ত্ব থংশাদার কোলে রাধাক্ষের নবনীত ভোতন ।।

পয়ার ।। উঠিয়া বনিল যদি নন্দের তনয় । নন্দ্র র ণা মৃততেতে প্রাণপায় ।। তবে ঘশমতি অভিভরিতে উঠিয়া। রাধ রে করয়ে কোলে কৃঞ্চেরে ছাডিয়া।। রা

থ হৈতে যশোদা পাইল বৃষ্ণধন। বাডিল অধিক স্কেছ

त्में ताथात करत (एश नन्द्राभी । था। था। विशासा बात फिरा दिया । ताथा सार अवायात यि देन किमा सा ক্ষের প্রসাদ নছে এইনবনীত। আহার করিতে আগে নাহয় উচিত। রাধারজানিয়া মনজীহরিতথন। পাতি न। अश्र माया अश्र कथन।। एनर ठटक हति ठानि पिर्ण **हाय । केननोत कारलवाथा (पर्थिवादत शाय ।। वा** मरकत घ जारव कृषिना नत्रहति। আছাড थाहेग्रा शर्ड वाजानाम कति ॥ सारशत कालाटा (मार्थ वानात रहा ন। রোদন করিয়। কৃষ্ণ গডাগডিযান।। তালাদেখিন-রাণী অ। দিয়া তরায়। দক্ষিণ কক্ষেত্ত তলিলইলা তন্ম बामकरक রাধাশোতে দক্ষিণে আহরে। यःगामात (का ल किया युशन माथिति ।। जमत्छ भून र र्हात कितला (स খন। রাধা করে নবনাত করি দরশন।। ক্রে,ধভরে থাবা पिय कः ডিয়া नहेन। आश्रनात वम्दन्ट पृहेशाट **पिन** किकार क्ष वरन नम्बानी। काफिया नहेल कन ताथा ब नवनी ।। बाधारेहरछ दब चाछि शाहेबाहि कारन । এতক্ষণ নালমণি ছিলেকোনছলে ।। কিছ্থাও কিছদেও রাধারে আমরে। তোমারে নবনী আমি দিবরে আবা त्र ।। मार्यंत वहरन इति के न पहानिया। म्रथेर हर हिना किছ वाहित कतिया।। आश्रीन ताथात करत पिना नाता র্ণ। হস্তপাতি রাধ। সতী লইলাতথন।। কৃফের প্রসাদ प्रा ত । बिर्घ (क्यान) ( र्घेम् (थे क्यानिनी पिरनन दक्

मुकानजावान ॥

29

নে। যশোদার কোলে রাধা কৃষ্ণের ভোজন স্বর্গে থাকি বন্যই করে সুরগণ।। বিধিবলে কতপুণ্য যশদার ছিল এইছেত য়াধাক্ষ্ণ কোলেতে ভূঞ্জিল।। ছেনমতে জনে জনে কছে দেবগণ। দ্বি চক্ছে যথা মূলব্যানের বচন।।

अथ देवमा विमाय ७ कनक छक्षन ॥ म्बायः ॥ विश्रमी ॥ त्राथाकृक अखब्दाः थाकि यद्मामात्र का নেঃ নবনীত করিয়া ভোজন। তদন্তরে রাধাসতীঃ প্রণমি র। যশোষতীঃ নিজগৃহে করিলা গমন।। তবেত যশোদ। त्राणीः कारलकति नील मणिः देवम्।कार् छेशनी छ हन्। করেন বিনয় যতঃ দে কথা কহিব কতঃ কর্যত সৰুল ন स्ता। वर्थात्वाल नन्द्रयायः देवाम् क्रिटल में छायः मान দৰ্য ভাবিয়া নাপান। কৃষ্ণে প্রাণদিল যেই; ভারে কোন म्द्र (पहे, जिल्दान किवा (हनमान ॥ लादिया किल्या श्रोतः उभाग्र न भाग्र छितः किल्म तरह देवरमात नमान ভাপ্তার ভা জ্য় ধনঃ আনে রত্যভরণা স্তপেই পর্বত প্রমাণ।। যতছিল মরে তারাঃ আনে সব ভার ২ অপ্রমি ত সীমাদিতে নাই। রথ যান হয়হাতীঃ স্নানিল বিবিধ জ তি লক্ষ আনে দৃষ্ণবতীগ ই !৷ বিচিত্ৰ বসন সার; আ निया विविधाकातः अप्तर वाथिल यउदन । नन्मः याय धन जारनः नम्बानी जारव मरनः वामि किवा पिव वह द्भा । तुक्ताक धनवानः पिरव बङ्धनपानः नात्रीकाि

रेकाथा शाव धन। (यह फिना शूजमानः जादत किवा फिव मानः किया व्यामि कत्रिव वर्धन ।। এकथा काहादत्र कदः मा हरम रक्सरन ब्रदः देवम् उक्टर खननी शायागी। এउडावि नन्द्रानीः मुहेहत्क शर्फ शानिः थिम्। माना वाक्न श्रा ণি।। তবে ক । ক্ষণে ধনীঃ মনেতে উপায় গণিঃ সেহে ক दि थारे जास्त्राजन । पवि पृथा पृ छ हानाः पृ एकते नाम পুরিনা: করি শর নবনী মাথন ।। লাভ্কলা ফলমুল্ট সূমিউ রসাল জলঃ আনে রাণী যত কিছু পায় ৷ সন্দেস অনেক মতঃ নাম তার কবকতঃ যত্ত আছে উপাদেয়। । হেন মতে ৰহুমতঃ আহারীয়ঃ দুব্য যতঃ আয়োলন কৈ ल नन्द्र । जादव द्वारी देवमात्रायः कृशाकित किछ् था য়ঃ তবে মোর সফল একায়া।৷ দেখিয়া রাণীর ভাবঃ বা ড়িল বৈদ্যের ভাবঃ মনে২ বাথানে আপনিাধন্য২ রাণী खनः धना स्वर म्निपृनः এड. ७ १ हर्ष्य छननो ॥ धना शायांनामा बाहे: उवछ: पत्रीयानाहे (मूह ভाविकिनिना আমায়। যদি জনহয় আর জন্মেজন্মে বার্থ যেন পাই खननी (जाभाय ।। देवप्र अञ ভাবে विभि दहनकारन नन्द्र আসিং করযোড়ে করে নিবেদন। বিনয়েতে নন্দ কয়ঃশ্ ন্থ মহাশয়ঃ আমি দানহান অভাজন ৷৷ সহজে গোয়া লা জাতিঃ নাহি জানি স্ততি নতিঃ কি ক্রিব ভোমার পূ बन । निब छ. १ क्शाक्तिः व। हाहेल आ १ वह्तिः जव यम

11 5011

26 गकामञादनि।। वं जिल ज्वन ॥ उमि फिला क्क्वनः जामादा कि फिरध ন হেন ধন কি আছে আমার। করিলে যে উপকার:তা ह कि विविद चातः मृथि नातिव उव धात ।। उरव रि কিঞ্ছিৎ হয়ঃ তব উপযুক্ত নয়ঃ সমু থেআনিতে আমিড রি। অতিশয় অলু হজানে; ঘুণা না করিয়া মনেঃনিতে ছ বে অনুগৃহ করি ৷৷ বৈদ্যবলে মহাশয়ঃ কভকর সবিনয়ঃ আৰিতৰ পুথের সমান। আনিয়াছ বহুধন; বহুমূল্যএ রতনঃ এতদ্বা নহে অল্প জ্ঞান'। তবে যে তোমারে ক ই; ধনের বাঞ্জিত নই; সেছ মাত্র রেথ পূত্রভাবে। আমি বশীভূত ভাবে; যেজন যে ভাবে ভাবেঃ বশীভূত থাকি তার ভাবে। ধনকড়ি নারি চাইঃবথা ভাব তথা যাইঃভা ব ভরে ভূমি দারেই। যেজন অভাব করে; নাহি ঘাইতা র বরে; ভাব বিনে না পায় আমারো। ভুমি অতি শৃদ্ধ মতিঃ ততোধিক ঘশোমতিঃ মুহভাবে হয়েছি সংস্তায়। ধন কড়ি তোল ঘর; আমি তব নহি পর; ইথেকিছ নাহি ভাব (पाय।) (जुङ्कति नन्दतापी: व्यानियाह कोत्र ननी: কিছ দেহ করিব ভক্ষণ। এতবাল বৈদ্যবর বাক্যে ভ্রি वर्षायुत्रं कीत्र नत् थाय उउक्ता। उरव रेश्न च उक्तानः কৈছ না দেখিতে পান্য কৃঞাকেতে অল মিশাইল । সবে वल এই ছিল; क्रायास काथारणन वन्यात देव तका निल्। (इनक्रांश दाधाकान्तः ताधात कनक 'यन्तः व्यवह াল করিলা তথায় । শীদুগথসাদ গায়:'কলন্ক ভঞ্জন সা

হেন আমতা। তার কি ভাবনানাথ তুমি যারপতি।। ত

মি বৃক্ষা ভূমি বিষ্ণু ভূমি মহেশর। তব দেছে নিবসরে

যত চরাচর ৷৷ তোষার নায়াতেমুগণ তিন সংবার ৷

)·• गुकान**ावनि** ॥

তৰ দয়' বিনে কেছ নাহয় উদ্ধার ।। কছ দেখি রাধার্কা ন্ত স্বরুপ বচন। কি করিলে পায়াত্তব ও রাজা চরণ।। গোপা প্রতি অনুপূহ যদি তবহয়। ঘোপতত্ত্ব কছ কিছু ছ

इया नपय ।। सनर हे जि পয়ার ।। কিশোরির কথা কৃষ্ণ করিয়া শ্রবণ। ভট্টছ য়ে কহিছেন কমল লোচন।৷ শুন শুন গুণবতী হয়েসা ৰধান। শাখ্যযোগ মতে কহি অপূৰ্কআখ্যান।। সু করে श्र कन ट्लांग कर्न कार्ना (पर्श ह्ट्स (पर् (यह कर्द्स थात्र।। व्यवश् शिर्द्धा जार् घरि कठायात्र। वान् य বাবৃদ্ধ জরাশরীরে সংযোগ।। সেদেহ পতন পরে প্রা ণি দুরে যায়। তাহে যে না করে শোক সাপু বলি তায় বিশেযত সুথদুঃথ সম তারজ্ঞান। সেজন পরম প্রাক্ত প खिड ध्रधान ।। क्रन ध्रन्थी भीरत्रत्र वृथा अखियान । पुक অস্থি মেধ মাণুস শোণিত নিমাণ।। সদা অপবিত্র মা ত্র হয় এই দেহামায়া মুধ্বজন গণ ভমে করে সেই ৷৷ অ নিত্য সংসার জাল কিছু কিছু নহে। মিছালোক মায়া য় আমার বলি কছে ৷৷ পিতা মাতা ভগি ভাতা বন্ধু দা রাসুতাকেছ কার নয় সব শোকাকর সূত্র ৷৷ মহা মোছে জীব চক্ষুসত্ত্ব অন্ধ হয়ে। প্রপঞ্চ ভূতের ভার মরে শীরে ৰয়ে।। ক্ৰমে কালক্ৰমে কাল পুৰ্ভ যবে হবে। বন্ধুবগপ রিবার কেবা কোথারবে ৷৷ নয়ন মৃদিলে সব অন্ধকারম या । जि.चाल मद्र न वाहि न न भया। मद्रिल शून

শ্রু অমা করিয়া গৃহণ ৷ গান্তবাদে নানা কেশে করয়ে জ্ भग त भूनता य मृख्र भूनः इटेरव कनमा ना व विद्या भग জীব শোকে অচেতন।। জীপ্তবস্ত্র যেমন ত্যাজয়। গৃহীগ ণে। নৃতন বসন পরে আনন্দিত মনে।। সেইরগ ভন্ম মৃত্যু বিধির বিধান। এক দেহ ত্যজি আত্মাঅন্য দেছে যান।। স্বলাল চক্রের ন্যায় গভায়াত করে। মুর্থলোক ইহাতে বিষাদ ভাবিমরে ৷৷ আত্মার বিনাশ নাই জানি য়া নিশ্চয়। বিজ্ঞলোক শোকাচ্ছন কথন না হয়।। স্থির ভাবে লাভালাভ সমকরে জ্ঞান। সূথ দুখে দ্যাগর তুল্য মানামান।। শীত উষ্ণ সমভাব ভাবয়ে যেজন। यथा विधि देखिदात्र कत्रदा प्रमन ।। त्म इत्र शत्रम नाष् বিজ্ঞ মহাজন। চরমে হইবে পাপ্ত আমার চরণ।। বিষ য়ে আকৃষ্টমন নাহয় যাহার। ষয়ণ সন্তোষে থাকে আনন্দ অপার ৷৷ স্পৃহা ছেষ হিৎসা লেশ করয়ে বজ্জন স্থির পাজ্ঞ বলি তারে কছে জ্ঞানি গণ।। পাইলে পুচুর त्न ना इस मृश्थित । हेक्ष्रियार्ग मृथ ভार्ग नरह आ निष्ठ ।। পাপপূণ্। वंद्ये , थ्ये मम (दाय करत । शृथ्म श्री বারে স্বেমারাথে অন্তরে ৷৷ স্ভার বশত জন্ম অংক আপনার। হন্ত পদ মন্তক লুকায় যে পুকার।। সেইকাপ জ্ঞানবান মনুষ্য সকল ৷ বিষয়ে বিরত যথা পদ্পত্তের बन।। बाजाउद्धारभ छान करत बाहत्। (प्रहारख আমারে পায় নিশ্চয় কথন ৷৷ ক্মন্তন্য ক্ষমাকা ক্র্যা

जार विश्वा श्रीभान ॥ आभात श्रीजात्ये क्रांत वर्ग व्यक्तिन कामा क्याक्त (जाग क्रिएं ना कामा व्यक्ति क्रांचा क्रांस कामा क्याक्त (जाग क्रिएं ना कामा व्यक्ति क्रांचा क्रांस का ना (प्रमा वित्वक ख्वान क्रेंट्ल श्रुकां ॥ व्यक्ति व्यक्ति व्यामा जाग क्रिया (यजन । क्याक्त व्यामा त्र क्रांस नम्भव ख्या म्जा व्यक्ति का विश्वा व्यामात्र । त्रावन विभ्वक क्या (जाग मा याशात्म ॥ (याग वियत् १ धर्ने ॥ व्यक्ति व्यामा भूगा व्याव क्रिक्ति श्रीत्य वर्ष (प्राथ व्यव्य ॥ व्याव ॥ व्याव व्याव ॥ व्याव ॥ व्याव व्याव ॥ व्याव ॥

প্রার। শাস্ত্র যোগ বিবরণ শুনিয় প্রার। শাস্ত্র যোগ বিবরণ শুনিয় প্রার। কিছি কিছ করিয়া মিনভি।। কহিলে শুনিয় নাথ যোগ পরায়ণ। সদত সজের ফল কহ নারায়ণ।। হই লে অসৎসক কিরা দোষ ঘটে। কিবা ফলোদয়হয় সতের নিকটে।। আমরা অবলা নারী কিছুই না হানি। অনুগৃহ করিয়া বলহ চক্রপাণি।। তোমার বদন বিগলিত বাক্য স্থা। শুবণে সুচিবে চিভ চাকারের ক্রা।। রাধি কার বিনয় বচন শূনি হরি। কহেন করণাময় ইম্ফান্য করি।। শুন প্রিয়ে চ রুশীলা সদসত সক্ষ। বিভারিয়া কহি যথা পুরাণ পুসক্ষ। বিভারিয়াকহি যথা পুরাণ প্রক্রা। মম গৃজানিত্য করে ক্ষবলে ডাকে। নিতান্ত আমর ভাবে মগৃহয়ে থ কে।। তাথগােইটন তীরে

युकानजावनि ॥ 308 छनिया बाभीत बाद्धा दाक्रण तमगी। बाक्रानाभना করিয়া রহিল অমনি।। ক্রমেতে দিবস গত সন্ধ্যাকাল क्या (हनकात्न उननीज वाजान जनगा। वानियाना য়ের কাছে কান্দিয়া কহিছে। অন্ন দে মাথেতে অন ক্ধা म महिट्छ ।। एक ना (मिथिए शाहे कर्छ नाहि र्धान । ভোজন করায়ে প্রাণ রাথগো জননা ৷৷ তবেত ব্যক্ষণী অন আনিয়া যোগায়। খামী আজ্ঞ হেত কিছু পাণ্শু फिल जाय ।। (फिश्या वलस्य भिन् कि फिल्ल थाईरङ । मा हरम कि ग्छ निदं भार्ष हम्मिएं ।। वृ । कारी कहि ল বাছা শুন বাপধন। পিতৃআজ্ঞানা শুন নাকর অধ্য স্থন।। একারণ তব পিতা কোকাবিফ রিতে। আজ্ঞা করিলেন মোরে পাংশু তোরে দিতে ৷৷ খামীর ববন आत्रि ल श्व माथा नाहे। এकशारण किष्डि पियाहि छाहे हाहै।। अम्प्राविध রाथ शृध यामात् वहन्। (थना ত্যবি ঘরেকর লিথনপঠন ৷৷ শুনিশিশু জননীরে কিছ नाविल्ल । ভर्म (क्ल पिर्य अस (ভारत कतिल ।) अ बारन निश्चित्र दरन প্রবেশিয়া । निवीछ कानन মাবে উত্তরিল গিয়া।। বৃংক্ষাপরে উঠিয়া রছিল সারারাত। মন্দুঃথে নয়নে নিগত নীরমাত ৷৷ প্রভাত হইল নিশি রবির উদয়। বৃক্ষ হৈতে নামিলেক ব্যক্ষণ তনয়।। প্রমূথে সত্তর চলিল অতিশয়। কিছ্দূর সমূথেতে

দেখে লোকলেয়।। চণ্ডাল বসতি সেট চণ্ডালের পাড়া

অন্য জাতি নাহিক চণ্ডালজাতি ছাড়া ৷৷ পথ সপ্ৰটনে षिक याहेन उथाया । भाकानत्न उन कत्न कि कत्त्र क থায়।। কতিজন চণ্ডাল একত্র বসিয়াছে। দিলস্ত গি য়ে উপনীত ভার কাছে।। গলে যজ্ঞ দূত্র দেখি চণ্ডালে व श्रा । विनिवादत फिल वानि উख्य वामन ।। श्रेगाम क तिया ज्ञात कर् ज्ञा मरत । कि काइ व वाश्यन हथानन गैरत ।। विषयं त वायात व रागाउ (कर्नाहे। वरनर छ यन कतिरम किति जाहै।। शरव गाउँदन क्षाम हरम हि य जिला छ।। किथिय जालन पिरम भी क्वत भाछ।। अनि য়। দিকের মুখে এতেক ভারতী। কহিছে চণ্ডাল গণবা कार्गत शिकि।। बाकिएक छान (भाता व्हे नर्सकन। (क मत्न अथादन उद रहेरव (डाजन।। वाकान कहिन आत কোথায় যাইব ৷ এইথানে গৃহবাস করিয়া থাকিব ৷৷ জ্ঞা তিগোত্র পরিবার নাহিকআমার। অঙ্গলেতে ভানিয়া ছি জ।তি কোনছার ।। শুনিয়ে চণ্ড লগণ পাইনসম্পুত दित्ल खिम (मा जवात ह । श्रुताहिल ।। यसमान हहेव তব আমরা সকলে। পরম আনন্দে বাসকর এই জলোঞা দ্ধ শান্তি ক্রিয়াক্ম বিবাহ পভৃতি। নকলি করাবে ভুমি যথ। রীত নীতি।। উপাজন হবে তাহে চাল কলা বড়ি। দক্ষিণ। বলিয়া আরো কতপাবে কডি।। আমরা নকলে

11 28 11

দিব তোমারবিবাহ। অনায়ানেগৃহ কমেতে নির্মাহা।
শনিইয়া হই এ সব কথা বিপ্রের সমার। চণ্ডালের পূ
রোহিত্য করিল মীকার।। তৃণের ফটির এক বান্ধিয়াত
থায়। রহিল চণ্ডাল সহ চণ্ডালের প্রায়।। চণ্ডালের
আমজল করয়ে ভক্ষণ। গল দেশে সূত্রমাত্র বুল্লাণ লক্ষ্
ণ।। চণ্ডালের কিয়া কর্মা করিয়া যাজন ২ চলু কড়িকা
চাবড়িহয় উপার্জনা এইক্পে কিছুকাল অতীত হইল।
চণ্ডালেরা পরামশ করিতে লাগিল।। পুর্মেতে আছিল
এই বুল্লাণ ছাপ্তয়াল। জাতি ভুক্টহয়ে হৈল দিতীয় চ
শুলা। কহিয়াছি ইহার বিবাহ মোরা দিব। বুল্লাণের
কন্যা আর কোথায় পাইব। আমাদেরজানিত চণ্ডালী
এক আছোজলপকালে ভাহার বৈধ্যম টিআছে।। আ
নিয়া ভাহাকে বুল্লাণের দিব বিয়া। দইজনে সুথীহবে
দোহারে দেথিয়া।। মন্ত্রণা করিয়া স্থির দিজরে কহিল
মুক্তা লভাবলি গুস্থ দিজবিরচিল।।

ত্রিপদী। যতেক চণ্ডালঃ হয়ে হামেহালঃ কহেশুন দ্বি
জপুত্র। বিবাহ তোমার দিব সাবে।জার; করিতেছিতা
রসূত্র।। শুনি বিপ্রবরং কহিছে সত্তরঃ আয়োজন কর স
বে। সূন্দরী দেখিয়াঃ কন্যা আনগিয়। তবেত বিবাহ হ
বে।। এ কথা শুনিয়া হরিষ হইয়া; মিলিয়া চণ্ডালগণ
আনিলেক কন্যা; বিবাহের জন্যা; কিবা কাপ সুগঠন।।.

एकि बिनि करे ीः कारे तांकिए हैं। वत् व बलोका शाया অক্টের সৌরভ; জিনিয়া বৌরবঃ গৌরব কি কব তায় ৷৷ খাদা সে নাসিকাঃ কর্ম" হাসিকাঃ গদ্ধ ভ ভাষিক। ধনী श्रक अल मला। कल निकलमा, पिरनत्वाकात्रमणि॥ वि ড়াল নয়না; পেচক বদনাং মূলাসম দন্তপাতি। দুটি পা পরে; গোদ শোভাকরে: গলে গলগগু ভাতি ॥ বি नाहेस। (वनः वासियाह (कनः किवा (थांशा शति शाहि छनना ठाहादः किटन पिव बाद्रः ययन वपति वाहि।। পুঠে হব শোভাং অতি মনলোভং পমনেগোধিকাহারে ক্শা গুমাকারঃস্চয্গতারঃ দোলে আপনারভারে ৷৷ চ शानिनी भनः कतिया वद्रभः कन्याद्र घद्रद्रश्च निन । वि প্রের নন্দনেঃ আনি ততক্ষণে শুভক্ষণে বিভাদিল।। স্ত্রী आहात आमिः कम बथा विशिः कतित्वक वारग्रा यठ।। পরেকন্যাবরেঃ বসায়ে বাসরেঃ যৌত্তক দিতেছে কত ৷৷ কৌত্তক প্রসক্তে নানা রস রক্ষে গরিহাসকরে বরে ৷ কে হ মলে নাক দেয় কাণে পাকঃ পরম রহস্য ভরে 11 এই রুপে সবেমহা মহোৎসবে; চণ্ডাল যুবভীগণে। বাসর জাগিয়া প্রভাতে উঠিয়াঃ গেল তারা নিকেতনে।। তদ खर्त दिया नरंत्र शियानियः गृष्ट् वानि उखिता । कन्ता র বদনঃ হেরিয়া তথনঃ আগনারে পাশ্রিল ৷৷ ব্রাক্রণ যেমনঃপ্রেমিক সুজনঃ রসিক রসের ভর।। চণ্ডালী

(मक्न शः कारण वाण कार शः शं जित्र (यमन मत्रा)। इहेन विन नः पार्ट्स (वेलक १३ तं उत्त तं उन मंछ । पिथिया प्राहाय (पार्ट्स (याह यायः प्राह्म (पार्ट्स प्राहाय तं उत्त । कारम हुछ खानः विष्ठत र छानः त्र हिल हुछानी नाय प्रम्म ि २९ (यार ११ काम (कनी (छार ११ मा थार के में कुहर्य ।। न। एक विष्कृषः (यम श्रित क्रिष्ठ वा खान श्रीम ।। (पार्ट्स वेक्छतः तर्ट्स नित्र छतः मद्रावद्य (यन स्तिम ।। छाखिया वियापः मिन्ना (ध्रमापः छावि स्ति भ्रमूम्म । ह्या क्र छहितः मूकान हो वित्र हो वित्र हो ।।

वर्थ नाड़ीबद्याशार्थान।।

পয়ার ।। শ্রীকৃষ্ণ কহেন শুন রাধা বিনোদিনী । রহি লেক দ্বিজ্ঞপ্র লয়ে চণ্ডালিনী ।। কিছুকাল আমোদে তে করিল বঞ্চন । অতঃপরে উপাস্থত অপুর্ক ঘটন ।। এক দিন চণ্ডালিনা ত্যজি লাজ ভয়়। ধেরিয়া পতির গলা অভিমানে কয় ।। দেখনাথ কেমন স্করী হই,আমি স্বর্জ অল্ভার কিছু নাহিদিলে ভ্রমি।। এহেন সোণার শ্বেল নাহি অভরণ। দেখিয়ানা দেখা ভ্রমি এ আর কে মন।। নবীন ঘোবনমোর জলদপ্রি প্রায়। অল্ভার বিনা কিইছাতে শোভাপায় ।। রমণীর কাপ ডালি হয়ত যৌ বনা। যৌবন প্রদীপ্ত কারী বসন ভূষণ।। অতএব সকাত রে বলি প্রাণনাথ। গহণ। দিবার চেন্টাকর অচিরাত केथन ना फिल्म बात (मर्य कि इहे व । योदन दिखा शिल श्रद्ध वृक्षिप्रित ।। (नागा माना श्रद्धित शाकित म থে বাসে। তোমারে করেছিবিয়া এই অভিনাবে।। ভাম यमि नामित्न शह्ना सन्यञ् । তবে क्न ,थाक्वि তোৰ। র অনুগত।। স্বর্স অলঙ্কার বিনানা রুহিব ঘরে। তোমা ति ছाডियाञ्चामि याव द्यानाखति ॥ ना रहेत्व जव नत्य রিহার রিলাস। অন্যপতি লইয়া করিব গৃহবাস।। যে ইমাত্র এইকথা চণ্ডালী কছিল। খিজের জ্দয়ে যেন শে ল প্রবেশিল।। প্রিয়সীর করপদ করেতেধরিয়া।। ভাষা মোর পাণপ্রিয়া রমণী রতন। মনপ্রাণ তোমারে করে ছি সমপণ। হয়েছে তোমার সঙ্গে প্রেম বাড়াবাড়ি। सदित्व कथन ना हत्व हाए। हाए।।। उत्व खिम हाउ যদি হয়ে অভিমানী ৷ নিশ্চয় কহিনু আমিত্যজিব পরা গী।। বিধি যোরে লক্ষীছাড়া করিয়াছে তাই। নহিলে कि श्रष्ट ज्या पिटा हे छ नाहे।। यमन क्रमी खिम युव তী তেমন। সোণ র গহন। বিনা সাজে কি এমন।। ভূমি পুরে বেপুকার পুকালিলে থেদ। শুনিয়া আমার মন্দ্র হইতেছে ভেদ।। সপথ করিয়া কহী তোর কাছে বলি **এই আমি यर्छ আনিবার তরে চলি ।। একমাস চুগক** রে বদে থাক ঘরে। অবশ্য আসিব অগমি ইছার ভিত (त ।। नानादम्ण (प्रणाखदा कित्रा खुमन। खिकामाद्या

गुकानजादनि ॥ এনেদিব সূবস্থ ভূষণ।। তোমার বাসনাপৃপ্ত করিব वि শ্চয়। ইহাতে নাভাবি কিছ্পুণের সংশয়।। একেল। त्रहित्न गृहरु नावधारन (थरका। ध्येक्पान वर्तन (बाद्र মনে মাত্র রেথো ৷৷ চলিলাম দ্রদেশে তোমার কার ণে। প্রতিক্তা আমার শুজ খর্স আনয়নে।। অতএব বি নোদিনী রোষ ত্যেয়াগিয়া ৷ অধানে বিদায় কর পুসলা क्हेंगा।। এতবলি রমণীর রাগ শান্ত করি। যাত্রাকরে বিপ্সূত আরিয়া শ্রীহরি।গৃহ হইতে বাহির হইয়াচলে যার।ক্ষেতে চণ্ডাল পাড়া গ শ্চাতে এড়ার। ত্রপান্ত त इ। छ। देशा अतर्गा श्रीमन । विद्याय कातरा वृक्तास बिनन ।। हिछाय बाजनहिक जारव काथायाव। काहा व निकटि (शल चर्छ धन शाद।। (क अमन खाइ (मा রে করিবে স্সার। কাহার উপরে আমি দিব এই ভার স সিজ হইবে কিলে মনের কামন।। নাত পাচ কতমত कतिरक् ভावना ।। উঠিয়া চলিল পুनः वन অভিমূথে। সন্তাপে তাপিত তনু গাচ মন দূই: थ।। নিজ্জন কাননে গিয়া করিল পুবেশ।ব্যাযু ভল্লকের ভয় না মানে বি (भव।। চলে যেতে পথে कामेश्यां हा कारि भाय। (वा চটথাইয়া শক্ত রক্তপড়েপায় ৷৷ পুভাকর করে করে वक् बनाउन। शरुरत वाजिक हिसा पर्मिन दन।। (क: थाय किंडू ठे। इतिएक नारत ।। कानरन जुमरा क्षर

बार्फिन विख्न। नम्ज यज्ञना याद्य विथाजा विख्न।। चारु। हाल अञ्चन कतिल पिवाकत । त्रचार्थ (पिथल अक छे हर उक्रवत ।। उत्भाषय निन्धि (चात रहेन यथन। वि রে২ বৃক্ষোপরে উঠিল তথন।। বঞ্চিবার উপযুক্ত শাখা। এক পেয়ে ৷ ৰ নিলেন দি লগুল যেন কপিছয়ে ৷৷ সেই ৰুক্ষে থাকে এক ৰাড়ীওছ নামা বেদ তত্ত্ৰ প্রাণে প শ্ভিত গুণধাম ৷৷ পরম ধামিক চক ধার শান্ত জ্ঞানী ! ব্সার সভায় কছে প্রাণ কাহিণী।। নিত্য গিয়া ব্স लाटक करह (याश कथा। देव वृन्द नदा वृक्ता खानन সর্মদা।। বৃহ্ম সভাত্যজি বক বাসায় আইল। গাছেতে মন্ব্য আছে দেখিভে পাইল ৷৷ বিজ্ঞ সিল কেবা ভ স্ব कर महाभय। किलान। चत्राधाल एक शतिहस् ॥ मान्यत गम् नंदर अप्रोय वन। यशीय गछात व्यास् छदत व्यापन ।। (कन एवन वरन सत्न कतिया कि व्यामा। य ডान बरमह छेहा बामात्र (मवामा।। वि कक्य शाल ভয় নাহিক আমার। আশ্রমে অতিথী আজি হয়েছে তোমার ৷৷ ক্ষায় তৃঞ্গায় আর কানন ভমাণ ৷ বিষয় वडाञ्चल कथाना भरत वपरन ।। छक्कडमवड मिय्र आरंशकब क्षाक्षी। (भारत कर यामात व छ छ भग्न स ॥ स्वित्री ষিভের কথা কহিংছ পাথি। অভিথীর সেবা ধর্ম কি ৰপেতে রাখি।৷ - একেবনভ্য তাহে নিসি অন্ধকার

372 'ম্কালতাবলি ॥ थाम्। पंदा वर्थात्न मिनित्व कि श्रकात ॥ याश्रास याजि थी यपि थारक छेशवात्री। इहेरव एकत शाल नामि वया तानी।। नद्राक कद्रिएक याम य'शु व् क इता मकन ভমের গণ্য ঘটে যাবে তবে ॥ এতন্তনি সাধুবক সারি महेश था। উডाविया উष्ण उट्ठें इहेया अपम्था। कन बारक यानि छेल्तिल बमोब्दल । एक्प्निटि वितिदलक बृहद् नञ्जा ।। मद्मा ना य हरे हर्य वा वा वा म हिनन । ছিল তনয়ের তরে ডাকিয়।বলিল।। কাঠেই ঘরিষণে অগ্রিযাগকর। পোড়াইয়া থাও মৎন্য আনিয়াছি ধর।। বৃক্ষপাশে কৃদ্এক ভোষা আছে কাছে। অলপা ন তথায় করিব। গিয়াপাছে।। গুনি দিল বৃক্ষহতে ত্ব तिएक नाभिल। कार्ष अफ़ारेश करम अनल कालिल।। লইয়া শক্তল মীন দথ্য করে তায়। আপনার মনস্থে পরিতোষে থায় ৷৷ আখাদনে পোড়া মাছ লাগে যেন मुवा। छेपत रहेन श्रुख खर्ख हुई क्रय'।। उपरत्र मनीन পানে সৃষ্ঠিন চইল। ছেনকালে বক বিপ্রসূতে জিজ্ঞা সিল। এখনত তব দেহ হয়েছে শীতল। তবে আর বি

লম্বেতে কিবা আছে কল ৷৷ বিশেষ করিয়া, বল আমর

সকাশো কে ভূমি অরণ্যে এলে কোন অভিলাষে 11

আদ্য অন্ত তোমার যতেক বিবরণ। শনিব সকলঅ:মি

<हे निरंदमन ।। विकद्म वृक्तकरल क्रम यात्रात ।

অতি লভাজন আমি পাপী দ্রাচার।। বিদ্যাশিক্ষা
হেন্ড পিতাকরিতেন রাগ। একারণে বর বাটা করিলাম
ত্যাগ।। বিবাহ করিয়া শেষে চণ্ডালের বালা। রস্ত্র আ
ভরণ বিনা ঘটিয়াছে জালা।। তাই আসিয়াছি বনে
কহিল ম নাটে। অন্তরে বিঘাদ অতি থেদে বৃক ফাটে
ব্যক্ষণের কথায় বকের হৈল হাস। কহিতে লাগিল
দ্যাকরিয়াপ্রকাশ। শনম্বিজ্ব বলি আমি এক উপদে
শাং যাহাতে প্রচর সোণাপাইবে বিশেষ।। আছ্য়ে আ
মার স্থা যক্ষ অধিপতি। যদি ভ্রমি যেতে পার ভাহার
বসতি। বিনয়ে কহিবে তাবে মোর নমস্কার। পাইবে
স্বস্তু রাশি অতি চমৎহার।। বিজ্ञলে কোথা সেই
যক্ষরাজ থাকে। কোনদিকে গেলে দেখা পাইব তাহাকে
ব্রিদ্যাপ্রসাদ ইন্ট চরণ ভাবিয়া। মৃক্তালতা বলিকহে
কহে ভাষায় রচিয়া।।

অথ দ্বির প্রের যকালয়ে গমন ।।

বিপদী। কহিতেছে জলচর; শ্নহ দ্বিত্তর যেথানে থাকরে যক্ষের। মেদিক উত্তরবটে; হিমালয় সন্নিক টে; গঙ্গাতটে স্থান মনোহর।। কাঞ্চনে নি ঘাত পুর; দপণের দপত্র হিরক কপাট তায় শোভে। চারিভিতে কূলবনঃ সুশীতল সমীরণ; মধ্যুত ধায় মধ্লোভে।। ১৫।।

সরোবর স্বিমল; প্রিত নিম্মল জল টলং মন্দ্রায়। পৃস্প পঞ্জ প্রস্ফোটিভ; গল্পে দিক আমোদিভ, কোকি न शक्षम चरत गाया। ছয়ৠ इ পরস্পর, বাধা আছে नित्रखतः नहनिष्ठर पनवन। मस्तुत मस्तुतो यंज्र निज्र নৃত্যকরে কতঃ বিস্তারিয়া কি কব সকল ৷৷ যঞ্জাজ নি কেতনেঃ প্রতিদিন নিমন্ত্রণ্ড হয় লক্ষ ব্যাহ্মণ ভোজন ज्वरल त थानावाछी साति घाँ शतिशा छै। पर्य निज् कति वार्याजन।। त्का लाक्। र ७ या मावः नरेया छे छि ক্ত পাত্র দ্রে ফেলে বেনমৃণময়। যাবেতমিসেইছ নে যক্রাজ বিদ্যুমানে; মোর নামে দেও পরিবয় 11 তাঁছ ইলে ধনপতিঃ তট্ট হয়ে তোমাপ্রতিঃ সুবস্ত লইতে আ জ্ঞাদিবে । যত তব ইচ্ছা আছেঃ ভার বান্ধি লয়ে পাছে তদন্তবে বিদায় হইবে।। বক্ষ্থে সবিশেষঃ জ্ঞাত হয়ে সবাদশঃ বা ণ জ্যার মনে ভাবে ৷ কভজণে সুথতা बाह यामिनी कतिया नाता ज्ञान छम्या हाल याद्य ॥ तिहल ভावना ভद्रः निमानाई वृद्काशद्रः भाता निभी যাগিয়া কটায়। প্রভাত হইলে পরঃ বৃক্ততে দিতবর নামিয় উত্তর মুথে যায়।। নিশাস ত্যাজিয়া দুড়ঃ আ খাস পাইয়া বড়ঃ বিখাস করিয়া শীষ্চলে। পর্মতকা नन कडः এডाইन শত्र दिखास ना करत (कान इरन ।। लम वाय द्वरण वायः नग्रथ (म्थिट शायः यक महा

ब्राकात ज्यन ।। या जिला थरत २३ (हरत मन म्करद ३ (होरिएक (विश्विष्ठ छेशवन। नक्षर शिवानशः भिन्त মাণিক্য ময়ঃ কণক কলশ তার কোলে ৷ খেত ব্লুবর্ম্ব नानः পতाका छे ডिए इस मानः भवन हिस्लास्न (हस्न দোলে ।। প্রশন্ত সমন্ত বাটঃ কত শত হাট যাটঃ গীতনা ট হয় জানের। মাতক তরক্ষতঃ রাজপথে ভ্যেকতঃ त्रथत्रथी (यथारन मिथारन ।। कतान छ। यगाकायः यस्क রাথে পুরদারঃ চমৎকার বিকট বদন। জিনি তাল তরু दहः निश्उ युगन के इं छय दे द्राव प्रमान ।। (कनकी। कक्कि । स्थान स्व स्व हो। त्यात व हो। इलाकात (पर 1 (कह नाटि हाटनगायः (कह डेड्र एधायः) मुयन मृम्गत्र थाती। (कर्वा रहेशा कृषा करत्र मुख मल्युष (कर मस्ड নাডিছে পাছাড। দেখে ছিব্ৰ সৃত ভয়ে দাঁতে২ একছ য়ে রারপথেথাইল আছাড়। দারিতারে ধরে তোলে ইলিতে বিজ্ঞাসে ছলেঃ কছ ভাম কোথাকার পাপ 11 কোন গোত্র কিবা জাতিঃ কারপুঁএ কার নাতিঃ সত্যবল নহে দিব শাপ ৷৷ মনৈ ভয় অভিশয়; ধিজবলে মহাশয় नग्मस शित्रस करे। विश्वविश्ल बस ममः नतायम (मा त नमः बात (कह नाई बाबावरे।। जुनिया बानक एमा बद्रिंग शाहेया (कून बद्रिंग अंत्रिह अर्थाता। वाद्या **এই रहेशार्ड्ड यार्व-यक तालकार्ट्ड, नमाहात कर जात** 

शारत ।। मृति घाती सम्हारमः ककम वहरन ভारयःवरल কিরেযাও কোথাব,বে। লক্ষাছাড। মর দৃঃথে ভামবল (कानगृर्थ) रकतास मद्रमन शादा। रह्था व्यानिदात ভরেঃ কে দিল বলিয়া ভোরে; বুলি ভোর প্রাণে নাছি ভয় 11 শুনিলে যক্ষের রাজঃ দিবেন উচিত সাজঃতবে তোরে কে দিবে অ প্রয়া অতএব পুনং২ বলিতেছি,ছিল खनः कितियाशना ७ नया थान। न ख्वा भक्र विदिः छ পায় না দেখি তোর কিকপে পাইবে পরিত্রাণ । দি জ বলেশুন দারী তকনা কারতৈ পারি তোমার সহিত বার২ ৷ এত আমি নহি মুট আছে কিছু মমাগুট কহিত বে মল সমাচার ৷৷ নাডিজঙ্গ নাম ধারি আছে বক ধ্যা চারी; সেই মোরে পাঠ ইয়া দিল। তারবাতা यक नृপে खानाइटि (कानकुर्भः भन्नामम् बामःदन करिन ॥ वा ती करक् वर्षे मंडा खानिनाम ख्व ख्यारमहेवक ह्या नृश লথা। কি: খং দাড়। ও তুমি জিল্ঞানিয়া আসি আমি वाळाहरन भारत ताळ रेमथा। उपल्यत चाती (यास সপ্রাদ কহিল যেয়ে যক্ষপতি বসিয়া যেখানে।। শুন ভূপ যক্ষেশ্বর আসিয়াছে দ্বিত্তর ইচ্ছাতার আসে বিদ্য যানে ।। নাম বক না ডজক তব প্রিয় অন্তরক সেইতারে করিল প্রেরণ। অসম্ভব কথা নয় যদি অনুমতি হয় তবে जारत्र चानि अहेकन ।। घात्रीत वहन छनि रकताब मन

গুণিঃ অনূচর গণ প্রতিকয়। কোথা আছে দি জবর আন তারে দীঘতর সুধাইব সথার বিষয়।। ভূপতির আজ্ঞা পায় দারী বায়ু বেগে ধায়ঃ উপনীত হইল দুয়ারে। কহেচল বিপুবর আদেশিল যক্ষেশ্বর সব্দে লয়ে যাইতে তোমারে।। ধন্যতব পুণ্য রেথা অদ্ফের শুভ লেথা সবের নহিত দেখা হবে। ভাগ্য কি ইহারপরপাবেমন মত বর দৈন্যদশাঘূচে যাবে তবে।। দারীর কথায়বিপু গমন করিল শাঘু মনেই আনন্দ অপার। শ্রীদ্গাপুসাদ বলে শ্রীকৃষ্ণের পদওলে মুক্তালতাবলি গুন্থ সার।।

অথ দি জপূত্রের সহিত যক্ষরাজের সাক্ষাৎ।
পরার ।। অনন্তর দিজবর অনুচর সঙ্গে। কটক ফট
ক দিয়া চলে মনরকো। নয়নে নগর শোভা নির্রাক্ষণ
করি। বলে একি অপকাপ আহা মরিই।। জনমিয়া
হেন পূরী দেখি নাই চক্ষে। স্বপু সমজ্ঞানহয়হেরিয়াপ্র
ত্যক্ষোপদাদ উপরে সব নাগরীসুন্দরী।চকিতেচঞ্চল
চিত্তছলে লয়হরি।রোজপথে যূথে যৃথে যক্ষনারী গণ
জলাশয়েই করিছে পমনা।দেখিয়াব। ক্ষণ পূপুমোহিত
হইন।চর সহ পূরীমাঝে পবেশ করিলা। বিদিয়াআছে
ন যক্ষমহারাজ্যথা।দিজগিয়া উপনীত হইলেন তথা।
প্রণাম করিয়া ভূপ করিল জিজ্ঞাদা। আমার নিকটে এ
লেকি মনে প্রত্যাশায়।কহ শুনিবকবন্ধ আছেন কেমনারো

মারে পাঠায়ে তারকি লাভ এমনা।প্রভাতে আনেন ভি নিনিত্য মোর পরে ৷ তবেকেন তোমায় পাঠানএতদুরে উত্তর করেন দ্বিজকথার কৌশলে।ত্রস্থানাডিজঙ্গ আছে न ल्याल ।। उँ राभारत ध्येतन कतिला धरेशान। कि ৰা চাহিলে দোণা পাব তবস্থানো।এইহেভ্জাশাসেভ বান্ধিয়া যতনোবহু কটে আলিয়াছি ত্যুমার সদনোংধ মা মতিধনপতি ভমিমহাশ্যাতামারকরণা হলেআর কারে ভয়।।সম্পতি আমারপতিরাথ উপরোধ।বিশেষত তোমার বন্ধরঅন্রোধায়করাভবলেআজি থাক দ্বিভবর নিয়মিত বাক্ষণ ভোলনহলে পরা৷ যতমর্স্ত নিতে পার করিব পুদান। পভাতে উঠিয়া কল্য করিবে পঞ্চান।। ল্বান সন্ধ্যা পূজাগিয়।করহ এখন। এখানে রহিলভোজ ब्बर्ज विभन्न ।। पृट्ड द क्रिन जुल (पर वानायत। वाञ्चन (ভाङन काल वानित्व भ्युत्र ।। य वाः छ। विन या प्र विमाय हरेका चिंदगुरा भिवा अक वाना वाही पिन। नियुक्त रहेन वानि ভৃত। पुरेबन। भी**उन नि**न ল দিয়া ধোয়ায় চরণা৷ নারায়ণ তৈল আনি অঙ্গেতে মাথায়। গঞ্সানুন করিবার ভরে লয়ে যায়। শরীর মাজ্জন। পরে সান করাইয়।। থাসা গরদের যোড় দিল পরাইয়া। তদ্পুরে লংয় খেল রাজার সভায়। আম ক্রিত দ্বিজগণ বৃদিয়। যথায় ।। তৈ ক্লবে বৃদিল গণনায়

के नक । थाप। प्वा वानियायागाय भव यक ।। हवा চোষ্য বৈ অ্পেয় নান। উপহার। মিটার সন্দেষ গব্য বিবিধ পকার ৷৷ কাঞ্চনে গঠিত পাত্র পত্যেকের পাতে বড়রনে উল্লানে ভূঞ্জিল একদাতে ৷৷ ভোক্তনাত্তে দকলে করিল অ চমন। কপুর ভাষ্টল করে মৃথের শোধন।। দক্ষিণ। দিলেকতবে যক্ষ কৃপমণি। হিরাচ্ণি মাণিক मुबर्ख मृङा म.न ।। याने साम कृशातन कति शा विश्वन शहरू र निकाम से कहिल शबन ।। कियम हिल चर्छ লোভি দিলসুত। ভাবি ভাবি ভাবনায় ভাবে গৃত্যুত।। তদন্তরে ভূত্যগণ আদিয়া তথায় ৷ উচ্ছিটা সুবস্থ পার ফেলিবারে যায় ৷৷ দেখিয়া বাকাণ কলে তাজি লাজ नाख। এই সোণা দেহ মোরে যক্ষ মহারাজ।। সুবর্ত পধ ন ধাত উচ্ছিত্ত ন হয়। বেদশাস্ত্র প্রাণ পমাণে ছেন কয়।। শুনিয়া ইঞ্জিতে হাসি বলে যক্ষেপর। নিতে পার যত সোণালহ ছিলবর ৷৷ যেইমাত্র যক্ষরাল অৰূ ख्डा कदिन। अशनत्म शिखम् उ नाहिए नाशिन।। (मरे নিশিকটে শ্ৰেষ্টে ভপ য় থাকিয়া। প্ৰভাতে স্বৰ্ভ ৰো स नहेन वाक्षिया।। छक्छत छात नर्य कतिन भगन। পথেতে ইইল রাজ ধার দরশন ৷৷ হাতাডিফা যায়বৰে पिरि'ত ना भारा। उभनी जनाफोडक वरकत वानास ॥ বক্নীচেভার রাথি উঠিল শাথ য়। বক্ষালাক হতে

ग्कानजावनि।। वक बाहेम उथाय।। विव दल कछ मृत्य बाह् दक्छाहै বহুদিন উভয়েতে দেখা শুনানাই।। তোমার কথায় আমি করিয়া পত্যয় ৷ পেয়েছি সুবর্স্থ রাশি গিয়াযকা লয় ৷৷ তোমার নমান মোব বন্ধু নাই কেছ ৷ বেচিনমে তব সলিকটে এইদেছ ৷৷ বক কছে অতিশয় পাইয়াছ करो । यर्जना छ. एवं करे हर्स हि यत्थरे ॥ এই कर्म মিন্টালাপ দূজনে করিয়া পূর্বপ্রায় বক মৎস্য আনিল ধরিয়।। অগ্রিজালি পোডাইয়। থাইল বাহ্মণ। বৃক্ষের भाषाय (पाट् विनन उथम ।। वक्वरेन चन्नतान निम् যাহ ভূমি। যাগরণ করি ধন রক্ষা করি আমি।। পরে মুমাইব আমি আপনি যাগিবে। রজনী প্রভাত হলে গ্ৰেতে যাইবে ৷৷ এতবলি জলচর যাগিয়া রহিল ক্ষে कत्म पृहेशाम वाकी उ इहेन ।। शात वक घृमाहेन द्वाक ণ জাগিল। মনে মনে বিবেচন। করিতে লাগিল।! প্র ভाত इहेल निर्ण याव निष्णाति। वनमार्य थाम्। एवं। भारेद (कथरन ।। दरकरत मात्रिया वह भर्ष (भाषाहेद

क्षाहाल এই মাপন সূথেতে थाहेद।। এতবলিউপকারী

বকৈ বিনাশিল। সুবস্ত ভারের অগ্রে বাদ্ধিয়া লইল।। পোহাইল যামিনী উদয় দিবাকর। ভার লয়ে পুস্বর্ন করিল দ্বিত্রর।। এথানেতে যক্ষপতি ভাবে নিজমনে

वकदक्ष (कन ना वाहेन अठकारा। वाश्वात जाहात

नगरा वर्षा (भन । कि कातरण वकवक्ष अर्थन ना अरना । विश्रम घटिए विका कति अनुभान। उद्भ कतिवादि पृष्ठ शालाद भाठीन ॥ उद्यास्त शीनवारम यक्का शास । কতদরে দিজবরে দেখিবারে পায় ৷৷ দেখে তার ভারে ब का बारह महावक। वरम अरत पृथि विक छहे वफ्रेक।। যেম্বন করিতে গেল ভোর উপকার ৷ বিনাশিলি ভারে ভই পাপী দ্রাচার ।।বিশ্বাস ঘাতক তোরে গুণা হয় ছতে। ইश विन दारक ভारत यकताल प्रजा। मृउवन করিয়া মারিল বহু তর । লইয়া চলিল যক্ষরাজ বরাবর মৃতবকদেথিয়া যক্ষের অধিকারী। শে কে শোকাতর षा कि क्लिवेटर वादी ।। जिल्लामिन नगाकात कर जन्द র। দৃত বলে বকেরে মারিল এই নর।। শুনিয়া ভূপতি অতিকোপিত হইল। চণ্ড ল দিলের প্রতি ভৎসিয়া কহিল হা কি কারণে বকেরে মারিলে দৃষ্টমতি। অপ রাধি নহে তোর কি করিল ক্ষতি 🛚 তোরে সোণা দিতে মোরে কৈল অনুরোধ। প্রাণ বিনাশিয়া ভই দিলিভার সোধ।। তোমারে বাঁধলে পাপ নাহয় কিঞ্ছি। ভূগি বে নরক পাপ যেমন সঞ্চিত 1) বলিতে বলিতে কোপে যক অধিপতি। বধিতে দিকের প্রাণ দিল অনুমতি।। দৃতগণ শতপুরহইয়া বেডিল । বিপ্রসূতেএকবারে প্রাণে व अवान भागी बीहाहरतान । व जब्दन जाबाद ह

ত माजिल।। (रथा वृक्तालारक वृक्ता चापि (प्रवर्ग)। विनम् (पथिया मत्व कतिया भमन ॥ भाग स्थाप कानि न नकन विवत्र। চनित्न यक्क विश्वित ভवन।। पर থিলেন মরাবকরয়েছে পড়িয়া। কমগুল ভল তাহে पिन इड़ाहेश। 11 প्राण पान (शरश दक डेठिशा दिनन ! দেবগণে একে একে প্রণাম করিল ।। তেশমরা সকলে প্রাণ ব।চালে আমার। যে মোরে বধিল কোথা সেই দুরাচার ।। যক্ষরাজ কছে তারেকরিয়া নিধন। ফেলিয়া দিয়াছে ভারে অন্চর গণ।। বকবলে হায় স্থাকি কৰা করিলে। আমার লাগিয়া কেন বাক্ষণ বধিলে। প্রাণীহত্যা হইল আমার মনযোগে। ঠেকিতে হইবে মেরে এইপাপ ভে গে।। অতএৰ তার প্রায়শ্চিতের কারণ ৷ নাহিক স্পয় আমি ত্যজিবজীবন ৷৷ এত্যদি প্রতিজ্ঞ করিল বক ধার। শুনিয়। যক্ষের পতি। ছইল অ ত্তির।। কহিছেন চত্তমুথ শুন যক্ষপতি। কোথা তার শব আছে আন শীঘুগভি ৷৷ দৃতগণ মৃতদেহ তথনি আ निल। मिक्किदनि माख वृक्ता वाहाहेशे फिल।। श्रानपातन চেত্ৰ পাইয়া ততক্ষণ। সমুখেতে দেবগণে করিল দশ্ৰ অন্তরের পাপ তার যাইল অন্তরে ৷ বোধভ নু প্রকাশিল স্দয় অহরে।। বিস্তর করিল তব দেবতা সকলে। আম त ममान भाभी नाहि जूम छला। युष्म स्ल जामात ह

हेशाहिन क्या পরিত্যাগ করিয়াছি निक १या हयो।। চণ্ডালের প্রায় আচি চণ্ডালী লইয়া অকৃতজ্ঞ হইয়াছি ৰকেরে বধিয়া।। এত ভাবি ছিলসুত বিবেকি হইয়া। আরম্ভ করিল তপ বনে প্রবেশিয়া। অভঃপর দেবগণ ৰকে সক্তেকরি। চলিয়া গেলেন যথা অমর নগরী।। 🗐 कृष करहं न शिरम कमलिनी मृन।। এই দেখ সদসভ नत्क (मायखन ।। विशे वन्ति बनिया व्यक्ति महान । **ঢेशालंब मह्दरम हाताहेल छान। এक ता**जि जातम् করিয়া নিবাস ৷ বিশক্তানি জলচর হইল বিনাশ ৷ যদ্য পিও বক করেছিল উপকার। তথাচ অসৎ তারে করিল न्र्ात ।। व्हेल व्यवक्ष व्हेम्म। यति । ज्रायुकाक রিলেও ফেলায় শঙ্কটে। দেথ প্রিয়ে সতের কি গুণচনৎ কার। প্রাণনাশ করেছিল ব্রাহ্মণ জমার।। তথাপিও ৰক্তার বাচাইল পাণ ৷ সাধু সল সহ বাসে হলোদিবঃ জ্ঞান।। শুনিয়া শীসতি অতি হবিতা হইলা। মূকালতা वनि गुरु विक विविधिता।।

ा निया इत्र व्यथ लोतम्थ मृनित पुन्ता हार्ति है

প্রার ।। এতেক কহিল যদি ব্যাস তপোধন।
শ্নিয়া আনন্দ চিত যত খাষ্থাগণ।। তবে পুনঃ
পোর মুথ মুনি মহাশয়। ব্যাসের নিকটে কন করি
য়াবিনয়।। অভ্যুত ক্ষের লীলা কথা সূধা ধার। শ্র

वर्ण व्यवन क्या वार्ष व्यविवात ॥ न्नावार् नृथान त्न क्षा निवादय । अनुषा शादन कृषा अधिक वाष्य या शास जिल्लास काल नरह मन । अवस आकार्या প্রভূত্ত কথনা। হইয়াছি ক্ষাতর অত্যন্ত এথন क्ष कथा म्यापाल ज्यकत मना। श्क्ष व्यापाता प्रा প্রভূনিরপ্রনা যাহার ইচ্ছার সৃষ্টি জগত ভবন ।। দে প্রভূর নিজ্ঞ ম গোলোক কেমন। কোন কপ থারি দেই বিভ্যনাতন ।। সাকার নিরাকার গো लात्कव इति । किल्डबा । शास्त्रल इरेना अवजित একা-শেতে অবতার কিবাপূভ তম। প্রকাশিয়াকছ প্রভপুত্র নিয়ম্বা আর তার পুগাধিক পুধান কামিনী श्रवमाम्।शृश्यायाः श्रात्वाक वानिने। त्रहेरव धीम। তি ৰতী কিলের কারণে। ভালুর নন্দিনী হয় জন্মে বৃন্দা वरम ॥ (कान देख वाद्यार १ द्रम १) क्ष्म हरा। সেকেন কলন্ধ বা টল ॥ এসৰ বিস্তার করি কল মহাশ य ।। শ্নিতে কৃষ্ণের কথা ইচ্ছাবড় হয় ।। ব্যাসদেব কর মুনি শুনসাব্বানে। দেবত নিভ্চ কথা কহিত্বস্থানে।।

মথা বুকা বৈবভা। তেজে কাগ্ৰুপ ঘদুকা প্যায়তে যোগিনঃ নদা। তভেছে। মণ্ডনাকারে সুর্য্যকে টি সম্প্রভঃ। নিভাপ সামঞ্চ প্রচ্ছন্ত গোলোকাভিবনে ৰচ।। ত্ৰিকোটি যোজনা শাম বিভীপ্ত মণ্ডল। কৃত তেলয়ৰপ সূমহদ্ত ভুমি ময় পর্ণ উৰা ভিতথবৈ क्षेष्ट शकान का है (या जन्ते। (वा (वाश (वाशी ন্প্যক্রপ্রকুর্ক স্থানিত্প।। 🖚 বামা থেনুভি রা को छ १ द्राम्य छन । य स्थाद । य साद १ द्राम्य १ द्र রজাবেফিড প্নানে শত শ্রু শত শ্রু লা সুদীপ্ত দী গুমীপ্ৰিত্ৰ আৰুশাৰ যোগিভিষ্ণু দৃশাৰ গ্ৰা क देवकदेवः ।। याद्यन शृजनीत्मन ठावनीका जिज ৰরণ।। অস্য ভাষা।। পরণ বুঁজা পরাৎপর পুরু তেলো यश । (याणि गर् याण नमा (य क्रम (यश सा। त সৈতেল মণ্ডাকার অতিশয় শোভা। কোটি সুয়া সক যার হইয়াছে পূভা।। অতি গুপ্ত হ'ান সে পূভূর নিতঃ ধাম। গোলাকার একেও গোলোকে তার নাম। বি কোঁট য়েজন স্থান অতি পারিপাটি। সৃত্তিকা নাছিক তথারত্তার মাটি ৷ প্রশানেকাটি যোজন বৈস্ঠ উপরে। ঈশ্বরের যোগে ধৃত আছে,শুন্তভরে।। বিরম্ব। ন মেতে নদা গোলকে বেটান। ৭ শ্চাতে কছিব সে বির ভাবিবরণ।। গোলকের মধ্যেকত কলু বৃক্ষণণ। বৃক্ষাব न मर्द्या बाह्य वर्ष्ट्र कानन ॥ शाश शाशीशन पाएछ মাছয়ে গোপালে। কামধেনু আছে কত ভাগার নিশা বে ৷৷ শতশ্ব নামে তথাআছ্যে ভূষর ৷ শতশ্বধার

সে পর্বত তেজকর ।। রাসমঞ্চ আছে তথা অনেক পুকার ভাহার শোভার সাম। নাহিক সংসার ।। একংগ্র গো লোক অতি গোপনীয় স্থান। মপ্রেডেও যোগাগণে দে থিতে নাপান।। বৈষ্ণুব গণের মাত্র দৃশ্য গম্যহয়। কৃষ্ণ ভক্ত হেতু কৃপাকরে কৃপাময়।। দ্বিজ ইত্যাদি ।।

শ্বেরঃ । লক্ষকোটি পরিমিতৈরাশ্রমৈ: সুমনোরছ রতেন্দ্র নার নিয় গৈ গোপী নামাবৃত প্রদা। শতমন্দি র সপ্যুক্ত ম শুরুপ সুমনোহর প। রুতু নিম্মাণলক্ষমন্দি র স্করপ । আশ্রমণ চত্তরসুঞ্চ চন্দ্রবিষাকৃত প্রুপ্ত পোলোক মধ্যদেশস্থ মন্দার সুমনোহর প। পুকার প রিথাযক্ত পারিজাত বনান্নিত প। কৌস্তভেন্দেশ মণি না নিম্মাণ কলসোজ্জল প। হীরকা সার নিম্মাণ সোপা ন সপ্য স্কর । মণাশ্রসার নিম্মাণ কপাট রচিতান্নিত প নানা চিত্র বিচিত্রাট্য মাশ্রমঞ্চ সুস্প্রুপ । বোড়েশ দার সপ্যক্ত সূদীগুণ রুত্বিপ্রিঃ । তত্র বিচিত্রাট্যে

অস্তাধা। এই যে গোলোক ধাম অতি অনুপ্র গোপীদের লক্ষকোটি আছয়ে আশ্রম। রত্নার ভাগেতে সুন্দর সূমিমিত। কিবা শোভা মনোহর চৌ দিগে বেফিত । একই আশ্রমেতে মন্দির শত্র। রত্ ময় প্রকার পরিথা সম্মিত। গোলোকের মধ্যবতি

প্রভুর আশ্রম। কি কব তাহার শোভা অতি মনোরম প্রকার পরিথাযুক্ত পারিজাত বন। শোভিতেছে কি সুন্দর পুস্পের কানন।। চত্তস্কোণ সে আশ্রম চন্দ্র বিশ্ব। কার ।। শোভিত মন্দির লক্ষ মধ্যেতে তাহার। অম্ল্য রতনে সুনিমিত সে সকল ৷৷ কৌস্কুত মণিতে তার কলস উজ্জন।। কপাট সকল শোভে মণিতে থচিত। কি সুৰু র রতন দপ্ণ সমলিত ৷৷ কিবাংস সোপান বন্ধ দিয়া পীরা সার । হেরিলে হরিস চিত সু দীপ্তাতাহার ।। মধ্য ভাগে প্রধান মন্দির মনোহর ৷ যোল দ্বারে সুসপ্রকু অভাম সূন্দর।। রত্ময় পদীপেতে করে তথা অ.ল। না নাবিক মণিমৃক্তা মাণিক্য পবাল।। তার মধ্যে রমণীয় রতুলি^হাসন। বিচিত্র চিত্রিত নানা মণি বিভূষণ।। তাহেবিরাজিত কৃষ্ণ গোলোকের পতি। বাংশনের অ গোচর অপুর্ক মুরতি ৷৷ বাক্য, মনে ধ্যানে যাহা ধরি তে না পায় ৷ কি ৰূপে সে ৰূপ আমি কহিব তোমায় ষৎকিঞ্চিৎ কহি তবে শুন তপোধন। নারদে কহেন বাহা দেব পঞ্চানন । বা নালে সময় দিয়া সময়

াৰ্ড অথ গোলোক নাথের ৰূপ বস্তু ন 11

শ্বোকঃ। নবান নীরদ শ্যাম্য কিশোর বয়স শুভুপ। শুরুমধ্যার রাজীব প্রভা মোচন লোচন । শুরুৎ পার্বণ পুরুজ্ব শোভাচ্ছ দন মাননপ। কোটিকক प्रम मुकानजावनि ॥

পলাবণ্য লীলা নিন্দিত স্ন্তংশ কোটি চন্দ্ৰ প্ৰী
পুট প্ৰীয়ক বিগৃহণ পভেঃ । সন্তিণ মুরলী চন্তংশ
মক্তলপ্ৰ মকলপ্ৰ । বিজিপ্তার পীতাণ শ্যগলে ন
সমজ্জলণ্ । চন্দ্ৰনান্ধিত স্কার পীতাণ শ্যগলে ন
সমজ্জলণ্ । চন্দ্ৰনান্ধিত স্কারপ কৌত্তন বিরাজিত
আলানু মালতা মালা বন্মালা বিভ বিতণ । বিভক্ত
ভিক্ষায়ক মুকা মাণিক্য ভূবিতণ । মন্ত্ৰুর পূচ্চ চূড্রক
মন্ত মুলটোজলণ্ । রত্বকেয় র বলয়ণ রত্ব মঞ্জীর র
জিতণ । রত্বলপ্ত ব্লোন গণ্ডলক্ষ নুশোভিতণ । মূকা
পণ্ডি বিনিক্ষের দলনণ্ সুমনোহরণ । প্রকারিকা
বিরাজি ন নিকোলত শোভিতণ । বীক্ষিতণ গোপিকা
ভিশ্চ মন্ত্রণ নাদ্রতথা । ভ্রিতাভিশ্চ মন্তিমানবে
আকৈং । বুলাবিক্ শিবানন্দ প্রাদে রভি মন্দিতণ ।
ভক্তিয়ণ ভক্তনাথ ভক্তানগৃহ কারকণ । রামেশ্বরণ
সুরলিকণ রাধা বক্ষত্ল ভিতণ । এবংক্পমন্ত্রণ যায়
ভেবিক্ষরা মন্দ্রা।

শক্তদশ বর্ষ নথান নার দ নিন্দ শোভা কলেবর।
পাঞ্চদশ বর্ষ সম বয়স কিশর। শারদে মধ্যাই কালে
সরে জ যেমন । তাহারে জিনিয়া সোভা সুন্দর লোচন
সরৎপার্মণীয় পৃত্তশশী শোভা চাকা। হয়েছে উজ্জল
কারি পভূ মুথ রাকা। ৮ কে: টি কন্দ পেরে জিনি লাবণ্য
সুন্দর। কোটি চন্দ্র জিনিয়া শ্রীপৃষ্ঠ রপুকর।। হাস্যযুক্ত

জ্পদর বদন স্প্রল। মোহন ম্রলি হতে জগত মঞ্ল বহি সপ্ফৃত পীতবন্ত্ৰ পরিধান।। চন্দনে চচিচত অঞ্ অতি শোভমান ৷৷ অজান লখিত কিবা মালতীর মালে বনমালাশোভে গলে কৌস্তত মিশালো ৷ ত্ৰিভক ভকি মাকিবা অঞ্চলে গঠন। সর্বাঞ্জে ভূষিত মণি মাণিক্য রতন্যা চূড়াঁয় সয়ূর পূচ্চ শোভিত নিমাল ৷ রত্ময় मुक्र टिंड अधिक উজ्জन ।। त्र न नृषुद्र शृश्म दर्श रिक्ष ত। রত্তকেয়ূর বলয়েতে ভুজ বিভূষিত।। রতন সংগ্রনে গশুস্বল সূশোভন। মৃক্তা পট্জি নিন্দা করি স্বদর দ র্ণন।। প্রকবিম্ব নিন্দিয়। অধরোষ্ঠ শোভা। উন্নত নাশ্। তে কিবাৰপ মনলোভা ৷৷ অপৰপে ৰূপ কৃষ্ণ অতি চমৎ কার। সর্বাক্ষেতে বিভুষত রত্ব অলঙ্কার।। সুস্থির যৌব ना (भाभी नहाम) वपन। हाजिपित बीकृत्कत बाह्रस বেফন ।। বিধি বিফু শিব আর অনন্ত প্রভূত। সুরেন্দ্র म्निख मन् मानदिख कछ।। नकल दन्त्न करत कति যোডহাত। দিপহাসনো পরিস্থিত গোলোকের নাথ ভক্তঅনু গৃহেতে কাতর সর্মক্ষণ ৷ ভক্তপ্রিয় ভক্তনাথ বিভুসনতেনা। রামেশ্র সুরাসক রাধিকার কান্তারা धा बक्क कि ज करण नाहि चल ॥ এই करण नातरमस्त करर मरर्थ है। शृन्द्रिश मराप्य करत्र छेखत्र। यम्।शि

मकान जावनि ॥

200

অনুপি হন প্রভূপরাৎপর। ভক্তের ভাবনা হৈছে বৃধ্ব কলেবর।। অত্রব সেই রূপ বৈক্ষব সকলে। ধ্যানিতে ধারণ করে হৃদয় কমলে।। দিলকহে মহেশের বাক্য সংক্রার ব্যাস প্রকাশিত ভাব। কহিলাম তার ।। অপ রে শুনহ ম ন অপূর্ম কথন। যেমতে করেন জ্রীড়া প্রভূ নারায়ণ।। গোলকে প্রভূর দৃই বিবাহিতা নারী। প্রধা না প্রকৃতী সতী শ্রীমতী স্লারী।। আদ্যাশিক্তি মহামায়া অনন্ত রূপিণী। প্রাণাধিকা প্রিয়া তিনি শ্রীকৃষ্ণ মোহি নী।। তদন্য বির্ল্জাদেবা গোপেরস্কারী।। প্রিয়্তমা প্রাম্যী পর্ম স্লারী।। এই দৃই বিবাহিতা পত্রী সেই ভান। উভ্যে করেন ক্রীড়াদেব ভগবান।।

অথ গোলোকনাথের বিহার ৷৷

শোকঃ । একদা রাধ্যাসাজ্প গোলোকে প্রীকৃতিই ষ্ম্প ৷ বিজ্ঞার মহারণ্যে নিজ্জনে রাসমগুপোরা বিকাস্থা নাজাগাদ্বধে নম্বয়প্পর্শ ৷ কৃত্বা বিহারণ প্রিকৃত্য স্তামদ্ফৌ বিহায়চ ৷ গোগনিকা বিরক্তা মন্য শ্লারাথ জগামহ ৷ তন্যাব্যস্যাঃ সৌন্দর্য্যা গোপী না শতকোটায়ঃ ৷ রত্সি হাসন্তা সাদ দশ হরি ম স্ত কে ৷ গুলাওলে মহারগ্যে নিজ্জনে রত্মগুপো ত্য়া শক্ত প্রীহরিঞ্চরত্ব মন্তপ ন স্থিত ৷ দুফাত্ত রাধিকান ন্য চক্রপ্র প্রেদন্শ ৷৷ व्यम् ज्ञाया। भयात। भारता । भारता । विद्रां । व्यम् व्यम् । व्यम् । व्यम् व्यम् व्यम् । व्यम् । व्यम् व्यम् व्यम् । व्यम् । व्यम् व्यम् । व्यम् व्यम् । व्यम् व्यम् व्यम् । व्यम् । व्यम् व्यम् । व्यम्यम् । व्यम् । व्यम् । व्यम् । व्

অথ বিরজার কল্পে প্রীমতীর গমনোদ্যোগ।
শোকঃ ।। তত্ত্ব বঁচন প্রজ্বা সৃষাপচ রুরোদ্চ । উবাচ
তাপ্ত স্বোকঃ ।। তত্ত্ব বঁচন প্রজ্বা স্বাপচ রুরোদ্চ । উবাচ
তাপ্ত স্বোকঃ । তাল্লু ক্র গ্রেলা নির্দ্ধা নির্

ম স জা গোপীভি ব্রেসপ্ত সতকোটিভি 11

অস্য ভাষা।। পয়ার। স্থাগণ মূথে শুনি এসর্
বচন। শ্ব্যাগত হয়ে প্যারী করেন রোদন।। তরে
ক্তক্ষণে রাধা স্থাগণে কয়। স্ত্যুকি দেখেছ হরি বির
আলায়।। দেখাইতে পারিবে কিতথা পাণেশরে।
সত্য যদি দেখে থাক লয়েচল সোরে।। স্থাসবে বলে
রাধে দেখেছি নিশ্চিত। বিরাজিত রাধাকান্ত বিরক্ষা
সহিত।। অবশ্য তোসারে মোরা দেখাইতে পারি।
দেখিতে যদ্যপি চাহ্ চল ব্রাকরি।। এতেক শ্নিয়া
রাধে রথ আরোহণে। স্থাসহ্ চলিলেন বিরক্ষাভ্রনে
তিনসপ্ত শতকোটি স্থা সক্ষেচলে। তদন্তে শূনহ্ ক্থা
দ্বিহ্বর বলে।।

वर विताशात तथ वस्त ।।

শোকং ৷৷ রত্ত্র সার রচিত্ কা টিস্মার সমপ্ত ৷

সম্প্রাণ সাল্লানাঞ্চ শ্রেষ্ঠ বাস্কর পর ৷ লক্ষচক সমাযুক্ত মনোযায়ি মনোকর ৷ কো টিঘটা সমাযুক্ত পরাকা কো টিভিযুক্ত ৷ শতিযোক্তন মুদ্ধঞ্চ দশযোহন বিস্ত ৷ মণিসার বিকারেশ্চ কোটিস্ত ফুসুশোভিত ৷ রত্দপণ লক্ষণা শতকৈশ্চ সমন্নিত ভোগদুব্ সমা যুক্ত বেমা দ্ব্র সমন্নিত ৷ পারিকাতঃ পুসুনানা মালা কোটি বিরাজিত ৷ স্লানা করবীয়ানা ম্থিকান ৷

ভবৈষ্ঠ । সচারু চল্পকানাও ম ধ্বীনাও মনোছারঃ।
মল্লিকানাও মালতীও মাধ্বীনাও সৃগাঁজনও। কদ্ব নাঞ্চ মালানাও কদকৈণ্ট বিরাজিতেও। সহস্দল ও মানাও মালা পলৈ র্মিভ বিতও । খেত চামর কোটিভির্মজ্যুটি ভিরন্নিতও । পারিজাতঃ পাস্নানাও কোটিভল্পবিরাজি তেও । রতুশ্য্যাৎদাটিভিশ্চ চিত্রবজ্পরিজ্দৈঃ। পুল্পোঃ পুকান যুক্তাভিঃ শৃক্ষারাহাভি রক্ষিতেও।।

অন্য ভাষা। জিপদা ।। অপ্র্র্ল রথের শোভা কোটি
ন্য সম পূভা শ্রেষ্ঠ রত্ত্ব সারে নির্মাণ। কি কর রথের
কথা যত রথ আছে যথা এরথের না হয় সমান।। লক্ষ
চক্র আছে যোড়া রথেতে নাহিক ঘোড়া বায় ভরে কর
য়ে গমন। মনোহর দীপ্ত অভিচলনে মনের গভি ঘোড়া
তারআপনি পরন।। কোটি য়ণ্টা বাজেএকেবারে। মণি
য়ারে বিভ রিত্ত কোটি ইন্ড স্পোভিত রথের উপরে
চারিধারে।। মধ্যেতে অপ্র্রুলন রত্ত্বসারে সনিম্মাণ
সরতি মন্দির লক্ষ্তায়। রত্তের দর্গ বভঃ লক্ষ্ণ শতং
সমলিতঃ কিরা শোভা পায়।। তার মধ্যে দৃত কৃত গৃহ
বাবহার মতঃ থাদ্য দ্ব্য কত পরিপাটি। পারিলাহ
গুলামার লোটি হাটা পরিনিতঃ বজুন্টি সম্মতঃ
কোটিই।। কোটি কোটা পরিনিতঃ বজুন্টি সম্মতঃ
থেত চামরেতে শোভা করে। নানা বিধ প্রস্পমালে বি

क्रिक इल्लरः कि जुल्ब त्राथत के शदा। कत वी श क्या भाकिः मिलक मार्लाक काकिः मास्वी कम्य के शिक्ति। सार्वाच्यत व्यापि कित्र शृष्णमाला माति माति जुवादक क कित्र ममा क्रमा। कि शिविकां मात्र के ब्रुक्त करत कि जाताः श्रीमा कि श्रीविकां मात्र के क्यां के क्षां कि मुक्ता कित्र मात्रालां का कि मुक्त कर सार्क के क्या बत्र ध्यत तक कि बादि स्वाप्त कि मुक्त कर सार्क के क्या बाह्य व्यवन । कि मुक्ते क्ष्माम दावीः क्ष्मात भाति काष्ट्र व्यवन । कि मुक्ते क्ष्माम दावीः क्ष्मात सार्वाः भीः के कित्र स्वाप्त स्वाप्त के स्वा

> অথ রাধিকার বিরক্তা ভবনে গমর ও বিরক্তার নদী ক্রপা হয়েন।।

অবভ্রাদথভুর্ত মবরুক্ হরিপিয়া। জগাম সাহদ্দেরী তণরতুমন্তপণ্যনে। দ্বারে নিযুক্তণ দদশ দ্বার পালণ মনোহরণ। লক্ষণোপ পরিবৃতণ মেরানন সাবোরুহণ। গোপাণীদাম নাযানণ শ্রীকৃষ্ণপুর কিন্তর । তম্পাট রুষা দেবা রক্তগল্প লোচনা। দূরণ গল্ড গল্ড দরণ রতি লম্পট কিন্তরণ। কিন্তুর কিন্তরণ কাল্ড ভুক্তামি তথপ্রভারহণ। রাধিকা বচনণ কাল্ব। নিঃশক্ষঃ প্রতি ভ্রাত তিমেবনদদৌগল্ভণ বেজপানি মহাবল। ভুক্তা রাধিকানাশ শ্রীদামননবিন্তরণ। বলেন প্রের সামাশৃঃকোপেন স্ফুরিত ধরাঃ। ভাল্ব। কোলাহলণ

শৃক্ষণ গোপিকানাপ হরিঃশ্বর্ণ। জ্ঞাত্বাচ ক্ষাপ্তাপ রাধামগুজনপুকারহ। বিরক্তা রাখিকাশকামগুজান হরেরপি। দৃষ্টারাধাপ ভয়াজা সাজংহীপ্রাণপুশ্চ যোগ তঃ। নদ্যস্তত্র সবিদ্বণ ওচ্ছরীবাধ বভুবহ। ব্যাপ্তাধ বজু লাকারণ ভয়াগোলোকমেবচ। কোটি যোভন বিস্তান্ত্রণ

অস্য ভাষা। ছেন রথেছরিপ্রিয়া করিআরোক পা। চক্ষুর নিমিষে, গেলা বিরক্তাভবন । আরে তে বা ইতে তথা দেথেদারপাল। লক্ষ্ণ গাপ পরিবৃত প্রিদার রাখাল।। ছাস্যুক্ত মুখতার সরোক্ত্রক সম। কৃষ্ণের কিন্তর সেই অতি প্রিয়তম।। তাছারে দেথিয়া দেবা আরক্ত লোচন ।। ক্রোপ্তেত কম্পিতাহয়ে বলোন বচন।। শুরুই ওরে অতি লম্পটিকিন্তর। দুরুই ও ছাড় দারবর ।। তে মারপুত্র আছে মদন্যা কামি না। দেখি তাছারে আমি কিন্তুপ সে ধনা ।। রাশ্বিকার বাক্যশুনি দার নাছাড়িল। বেত্রহস্তে মহার লি অপ্যে দাড়াইল। রাশ্বিকারে পুরেশিতে নাছি দেয় পুরে। নিঃশক্ষে প্রিদামরহে দারক্ত্রক করে ।। ভাছাদেখি রাশ্বিকার যত স্থিগণ। ক্রোপ্ কম্পুমান তন্ যুপ্তিত লোচন ।। একত্রেতেঅস্থ্যাস্থা ক্রেপ্তে পাইয়া। লক্ষ্ণ গোপসহ ফেলে প্রিদামে ঠেলি

য়া। বলেতে প্রীদামেঠেলি চলে সর্বন্ধন । মহাকোলা হল শক্তিল দেইক্ন । অন্তঃপুরে থাকি শক্ষ্মনে নারায়ণ। অন্তঃখামি ভগবান জানিলাকারণ ।। আই লা প্রীমতিসতা সথা সঙ্গেকরি । লজ্জাহেন্ত অন্তর্জান হইলেন হরি।। তবেত সভয় চিত্ত বিরক্ষা সূন্দরী। মনেই ভাবেধনী উপায়কিকরি।। অন্তন্ধান হইলেন আপনি প্রীপতি। নিকটে আইলরাধা অতিকোপব তা ।। রাধিকার সঙ্গেআমি বলে নাপারিব । এথনি তাহার কাছে অপমান হবা। এতেক ভাবিয়া ধনা ভ্রেতেঅন্তির । যোগেতে ছাডিলপ্রাণ সলিল শরির দ্বাহয়ে অক্ তার প্রাবিত হইল। মহানদী রূপেদেবী পোলোক বেডিল।। বলয় আকারে কৈল গোলোক বে উন। এককো টি যোজন প্রান্তর্জারনাই নির্ক্তার বিরক্তার্য হইতে নির্দ্ধণা নিম্নেতে গভীরভারনাইয়নির্জ্ব্যাবিরক্তরেন্দ্রীরূপিছন্তব্যক্ষা।। অথ শ্রীমতী বিরক্তাগ্রহ হইতে নির্ভাময় গমন।

পরার ।। বিরজার রতিগৃহে প্রবেশি কিশোরী ।
দেখেন তথায় নাহি পুর্ণকান্ত হরি ।। বিরজা নাহিক
তথা দেখিলেনসতা । নম্মুথে বিষল আছে নদ্দী বেগব
তা ।। তাহাদেখি কমলিনা মনে বিচারিলা। মমভয়ে
নদীরাপ বিরজ হইলা। হজ্জা হত্ত নারায়ণ হইল অন্ত
জান। এতভাবি তথা হৈতে করিলং গগন।। স্থাসহ

हिविद्या निकालरम (शन। अंशद्र अन्ह (य क्श उथा रेहल।। विवकारत नमोक्तभा (मिथिया उथन। भरन्छ भा हैन वुर्था कमन (नार्षेम्।। वित्रका नमीत जीत्र वानि ত্রাক্রি। প্রেমভাবে সমাসল হইলেনহরি।। দুইচকে अद्भ खन कद्भन (द्वापन। उटेक्क्यद्भ विद्रकाश ए।क्निन उथन।। (काञ्चा (इ वित्रका मम श्रार्भत श्रियमी। करन रेश्ट के रिमीय (पथारम्श्वामि ॥ श्वाकन कनका इ हैया हि बार्ति । धंतियो न् जन उन् बाहे प्रक्ति ।। बी हित्रवाका छनि वित्रका जुन्मेती। कल रेहरक छेठिरनन দিব্য দেহ ধরি।। রাধাসমা রাপবতী হইয়াতথন। না (थर निकटि वामि पिल प्रभंग ।। निजनाती विवसारत দেখি ৰূপবতা। প্ৰেমভাবে ভবিলেন গে লোকের পতি চুম্ব আলিঙ্গন দান মৃত্ মৃত্করি। ভট্টাহয়ে বিরঞারে बलन बीहात ।। सनिधिय मडार विविद्ध जामाता নিত্য তবস্থানে আসিব নিশ্চয় !! রাধার সমান ভুমি প্রিয়সী আমার। ইহার অন্যথা কিছু নাহিভাবআ মার এতবলি কোলে লয়ে বিরজা সুন্দরী। বিরজার তারে नं थে বনিলেন হরি।। তাছাদেথি রাধিকার প্রিয় স্থী যত। পুনরপি রাধিকারে করাইল জ্ঞাত।। এ দুর্গাপ্রমা म् बत्न क्ष श्राप्त । प्रजिक (प्रवाद क्षा क्षा क्षा ।। द्वाधिकात निकटि शालाक नारथत

11 76 11

## মকালতাবলি।। আগমন ও মান।।

প্রজ্ব করোদ সাদেবী সৃষাপ কোধ মন্দিরে। অন্ত বক্রণ অ্যাতঞ্চ বিষম্ভঃপয়োমূর্যণ। মদাশ্রমণ সম। গন্তপ যুম্বণ দাসেক ন দাস্যথ। এত্যানিতার ক্ষোজ গাম রাধিকালিকণ। প্রতন্ত্রী রাধিকাদারে প্রীকামে সহ নারদ। রাসেখরীণ হরিণ দৃষ্টা উবাচ্ অপ্রিয়ণপুরঃ বিরজাপ্রেয়নী কান্ত। সরিদুপ বভুবহ। দেহণ ত্যুক্তা মম ভয়াত্রথাপিতাসিতাণ প্রতি। হে নদি কান্ত দেবেশ নদি সম্ভোক্ত মিচ্ছতি। তত্তীরে মন্দিরণ কৃত্য তিইহ তয়ানহ। নাদ বভাব সাতঞ্চ নদোভবিত্ত মহসিনদ্দ্য নদ্যা সাজ্যঞ্চ সক্রমে গুনষ। নতবেত্র। সজাত্রী পরমা প্রতিশ্বনে ভে জনে সুখাত্র। ইত্যুক্তা রাধিকা দেবী বিবরাম রুবালিতা। নোত্তে। ভূমি শ্রমাত্র গোগী লক্ষ সমলিতা।।

অস্য ভাষা। পরার ।। সথি মৃথে কললিনী শুনিয়া বচন। ক্রেপ্রের ক্রেপাগারে করিলা শয়ন।। স্থিগণে ডাকিবলে কান্দিতেই। নাদিবা আমার ঘরে প্রীকৃষ্ণে আসিতে।। সন্ত ভরা বিষ যেন মৃথে দৃষ্ণরয়। অন্তরে বক্রভাভার মৃথে হাস্যময়।। এইকপোকহে রাধা স্থী র সহিভ। হেনক,লে রাধাকান্ত আনি উপনাত।। প্রীদা মের সংহতি লয়ে প্রিকৃষ্ণ তইন। রাধিকার ঘারে গিয়া দিল দরশ্যা। রাধিক আইন কন্তে দেখিয়া স্কুথে।

कृष्ठेवाची कमलिनो करह मरनामुश्स्थ ॥ भाजीकन ७८ इ নাঞ্নিবেদন করি ৷ তোমার প্রেয়নীভার্য্যা বির্জান मति ॥ ममल्या निम्म । इहेल (मधनी। उथानिह ভাষার কাছে যাহ গুণমণি।। ওত্ নদীকান্তভমি দেবে র দিখর ৷ নদিরে সম্ভোগ ইচ্ছা কর নিরন্তর ৷৷ এক্ষণে (म निष छीद्ध सन्मित्र कित्रशा। थाकर छथा (महे निष्ठक) नरेया। । निप यपि रेग्न उव शियुउम नाती। উচিত रहे তে নদ তোমায় আছরি।। নদি সহ নদের সক্ষ সংম। চিত। শয়নে ভোজনে সূথ স্বাতি সহিত।। এতবলি ততক্ষণে নিরব হইল। ক্রেধে কমলিনী ভূমি শ্যানা ত্যজিল।। লক্ষ গোপী নিকটেতে আছিল তথন। আজ্ঞা অনুবজি হয়ে রছে সর্লজন। যে ভাবেতে গোপীগণ আছ্য়ে তথায় ৷ শুনসবেএক ভাবে দিলবরকয় ৷৷ রাধি কার সেবা দ্ব্য হস্তেতে করিয়া। চারিদিগে ঘেরি সবে द्रार प्रशाहेया।। आकामक वानिया (यागाय उठक्रण। वाळाविनाकात मृत्यं नामदत वहन ॥

পরার ।। কোন কোন গোপী আছে ধরিয়া চামর ।
কাঁক করে শৃষ্ম বন্ত অতি শোভাকর ।। কারিভরা সূবা
নিত বারি কারা করে। প্রসে কটিত প্র গূম্প কারছন্তে।
পরে ।। কেহ বা তাখ ল হন্তে আছে দাটোয়া। অপূর্ধ পু
শোর মালা কেহ বা লইয়া।। সুন্দর দিন্দুর হন্তে আছে
কোনজন। কার কার হন্তে মণি স্থাণিক্য রতন ।। কেহ

मुख्नामठाविन ।।

(कर शिवसाएं तठन अनकात । कथन कि वाञ्चारस श्री

मठीताशात ।। व । व । वाणी कात करत सखम्वाक्रमो ।। म

क्रिट्ठ मिणूण (कर (कर वानावनी ।। खाछा। रेर्ट्यिश (तृ

मृठ्ठ शीठ वाष ) करत । এर रेट्ठ मण् एथे जाता खाए ए एवा

फकरत । एथेन नीस वस्र नरस खाए एको नक्षम ।। कि जानि

एथेनिट्ठ मन रस वा कथन ।। मथुरस्य कि उथा (कर्

कर खाए । मृथ्या मृणाज नरस (कर ति खाए ।।

मानाविष (वण वस्र करवां महेसा।। कि जानि शार शार विस्त कार्या।। खिल कार ।।

कर करल नक्षमा । सिंग विश्वसा । स्वा कर्म कर्म कर्म करा ।।

कर करल नक्षमा शार ।। विश्वसा कर्म कर्म कर्म करा ।।

एण विस्त साली मरवा मरवात ।। मरवारत (वण शता ।।

एण विस्त साली मरवा मरवात ।। मरवारत (वण शता ।।

पण विस्त साली मरवा मरवात ।। मरवारत (वण शता ।।

पण विस्त साली मरवा मरवात ।। मरवारत (वण शता ।।

पण विस्त साली मरवार मरवात ।। मरवारत (वण शता ।।

पण विस्त साली मरवा मरवात ।। मरवारत (वण शता ।।

मार्विक छलमा ।। कि कर्म मार्गाम । स्वा (व्य ना (वा शिवा

ণে। সৃষ্টি চালে রাধাঅকে জন্ম সর্বজনে।। অথ রাধা পূরে প্রবেশিতে শ্রীকৃককে বারণ ও শ্রীকৃকের স্থানান্তরে গলন।!

ত্রিপদী ।। এরপেতে গোপীগণ তথাছিল যতজন্ট রাধা বাক্য করিতে পালন। যাইতে রাধার ঘরে মানা কৈলা নটবরে শুনি হরি রহিলা তথন।। দারে রহে প্রাণপতি ভাষা দেখি রাধাসভী পুনরপি বলেন বচন হে কৃষ্ণ বিরজা কান্ত আমার আথির অন্ত দাড়াই প্রনা

করহ গমন।। ওছে নাথ শাশকলে গ্লাবতী হে সুশী ल भाषवी (शा श्रिय महहतो। निावतह अधृत्वत कि का काय वामात पूरत वामिनहि वित्रकाम नती। এত यकि রাধাময়; তবেত যে স্থিচয়; কৃষ্ণেকহে করিয়া বিনয় হীত তথ্য নীতিসার; সময় উচিত আর; যাহাতে কো ধের সাম্যাহয় ৷৷ কেহবলে ওচে হরি: অণেক উপেক্ষা করি স্থানাত্তরে কর্ছ গমন ৷৷ ঘুছিলে রাধার মানঃ আ মি গিয়া তব স্থান ডাকিয়া আনিব ততক্ষণ। কেহবলে প্তিকরি ক্রণকাল যাহ হরি গৃহান্তরে ভাম হে এখন।। তোমারি বন্ধিতা প্যারিং তোমাবিনা হে মুরারী করে व्यात विविद्य वहन।। (म्या करह कान कन कर याह বৃন্দাৰন মানাত অবধিনটবর ৷ কেছ পরিহাসে কর গুনহে কামুক রায় ভক্তি ভাবে মান ভক্ত কর ।। কেহবা সম্যুথে আসি কছে ঘন হাসি২ মানিনরী নিকটেতেযাও অ'প্রকৃকি কব আমি যেভাবেতে পার তুমি মান ভর করিয়া উঠাও ৷৷ হেনকালে আসি পূনঃ প্রিয়তমা স্থী कान, बाधरवात निवात । नहास सगउर्गा नमानक সঁচ্ছমতি কোধহীন সহাস্থ্ৰদন।। শুনিয়া দ্থীরৰ গী সেইক্ষণে চক্রপাণি গৃহান্তরে করেন গমন।। ছিভবর कर्ड् श्रवः छपाछ प्रकाल छन श्रीप्राय्य लहेखा विवद्गा।

> শ্রীকৃষ্ণের গৃহান্তর গমনে শ্রীদামের ক্রোধ ওশ্রীদামের প্রতি শ্রীমতীর অভিদাগে।।

১৪২ সুকালতাৰলি।।

পরার ৷৷ বারিত হইয়া কৃষ্ণ গোপীর বারণে ৷ গৃহা छत्त भगन करतन एएकरा।। कृष्कत भगन एरव निर्म ম কাষিল। শ্রীমতীর প্রতি কিছু কহিতে লাগিল।। কো थएं किटगाडी हिन जातक (नाहनी। श्रीमाम जातक हत्क कार्य करह दानी।। (कन (न) जननी खिम जामा इ ने च रत । करेवाका कर किल्ना जाव अल्डा । आ जा রাম পৃষ্ঠ কাম যেই ভগবান। বিড়ম্বনা কর তুমি একো ন বিধান।। ভাননা কাহার পাদ পদ প্রাকরি। হইয়া ছে আপনি গে। ত্রিদশ ঈশ্বরী ।। দেবীতে প্রবরা ভুমি रनदा कति कात्र। ना कानियः निखमत्न कत् अरुद्धात् ।। व्यवनीना करम कृष्य চाहि ज्ञांकरा । उत्तम्मा (काहि কোটিপারেন সূজিতে 11 বস্থেতে বিক্রপ সে আ शनि। कमना कराय मिना दिवन दसनी।। ভिक्ति ভाष न्तर्य (पर्व) हरम् अक मन। (कर्णाञ म जन। करत्र न यश न छत्रगा। वर्ष शीयुरयत स्राव (मवी मत्रम् छी। ज्ञ করি যেইজনে সদ করে স্তৃতি।। এংহন প্রভুরে তুলি কহ কট্তর। ভাননা যে কৃষ্ণচল্ড তোমার ঈ্ধর।। রোশতালি শীষ্ উঠ শুনহ্বচন। ভজিভাবে ভল शिया बीहर्ति हत्।। बिषायत अवल डेलन कर्हे कानो । मनिया (क्रांकिन देशना बार्षा ठाववानी ।। या हित्त काहेन। (पदी (कार्षिक वर्गन । कारपाकी म् उद्भागे वाहक दगाइनी ।। विद्यारमञ्जू करह (प्रवी

निश्त छेडत। अत्रक्ष नाम महामा नृष्णि किसत ।। ভূমিকি কেবল জান তে মার ঈশবে। আমি কিছ माहिकानि ভেবেছ অভরে ।। ভোমারি দীপর वांबारम् त नय। এই कि वांशन बतन (कत्न किन्ह शं ॥ अत्यक्ष धम खिम्छ नहींन चार्छ । जननी बि ন্দিয়াকর জন্বকেরেস্ত ত। অসুরের। নিন্দা যেন করে দেবতারে। দেহ মত নিন্দা ভাম করহ আমারে ।। অসুরী মভাব ভোর ওরে মৃচমতি। অসুর হইয়া शिया जमा वन् मिछि।। (शारनाक क्रेट छिमि क्रास গমন আমি তোরে অভিগাপ দিনাম এথন ৷৷ কে তোরে রাথিতে পারে ওরে দুরাশয় । অব্যথ আ मात्र वाका आनित्व निक्रम्।। এउवनि तारमधतो প্রেপ্রবেশিলা ৷৷ জৌনভাবে পুনরপি শয়ন করি न।।। निकटिएंड याहिन यटक नथीशन। विकक्ष করে তারা চামর ব্যক্ষনা অথ শ্রীমতিরপ্রতি শ্রীদামের অভিশাপ 11

পয়ার।। শুনিয়ারাধার বাণা জীদাম কোপিল।
কিংধ ভার ওঠাধর কাঁপিতে লাগিল মহজোধে জীম
তীরে অভিশপ্ত করে। বুজবোনিঃ প্রাপ্তা ভাল হবে বুজ
পরে।। মান্ধা সমান কোপ তোমার দেহেতে। মান্ধা
হইবেভমি আমার শাপেতোএকথায় কদাচিত নাহিক
সংশয়। অবস্য অধিকে হবে মান্ধা নিশ্চয়। মুচম্বতি

ৈ ৪৪ শুকালত বলি।।
বিশ্বজাতি আয়াণ নামেতে। শ্রীকৃষ্ণের অপ্শারাত হই
বে বুজেতে।। ভপরূপে থায়ত হবে সেই বৃন্ধারনে।
তোন কে আয়াণ পতি বলিকে ভ্রণে।। আয়াণের
রাণীরূপে সেথানে রচিবে। পুনরপি বৃন্ধারনে শ্রীকৃষ্ণ পাইরে।। কতদিন ফ্লুসম্বে করিবে বিহার। তদন্তরে বিচ্ছেদ্ ঘটি ব আর বার।। শত বর্ষার্থ ক্ষ্ণ বিচ্ছেদ্ রহিয়া। গোলোকে আসিবে প্ন শ্রীকৃষ্ণেপাইয়া।। এত
বলি পুণমিয়ারাধার চরণে। কৃষ্ণের নিকটে পেল বিষা

বলি পুণিমিয়ারাপার চরণে।কৃষ্ণের নিকটে গেল বিষা
দিত মনে। জ্রীদান কৃষ্ণের পদে পুণাম করিয়া। যত্ত
সমার্চার কহে কান্দিয়াই।। পূর্বাপর শাপাশাপি সকল
কহিল। রাধিকার সহতারে যেরপে হইল।। রুফিয়াম
কল কথা করয়ে রোদন। দৃইচক্ষে হয় ঘন বারি বরি
ঘণ। জ্রীদামের রোদন দেখিয়া নারায়ণ। আখাসি
য়াকনতারে মধুর বচন।। থেদনাহি কর ঘাহ ধরণী
উপর। অসুরের রাজাহয়ে জ্রিবে সত্তর।। ত্রিভূবনে
নাপারিবে জ্রিনিতে জোমারে। অজ্বয় হইয়া স্থ ভ্রিজ
বে সন্বারে। পঞ্জাশত যুগাতীতে কালের উদয়ে। শি

বের শুলেতে তব সেদেহ ত্যজিবে ৷৷ আদিবে আমার কাছে আশীষে আমার ৷ যাহ ভাম ভূমিতলে ভয়নাহি আর ৷৷ কৃষ্ণের মৃথেতে লুনি এতেক বচন ৷ কৃতাপ্রাল হয়েকিছু করে নিবেদ ৷৷ আসুরীক দেহে আমি রব বহু দিন ৷ নাকরিহ কদাচিত তবভজিঃ হীন ৷৷ এতবলি কৃষ্ণ পদে করিয়া প্রণাম। আশ্রমের বাহিরেতে গেলেন প্রী দামণা দেইদে অসুরবর শ্রীদাম সুমতি। শশ্বচ্ড নামে সেই ভঙ্গণার পতি।। দিল কহে কৃষ্ণচন্দ্র করণ। সাপর ভক্তগণ রক্ষাহেত সদতকাতর।।

वश बीपारमत गारिश छोठा रहेशा बीमठी ত্রীকৃষ্ণ নিকটে গমন ও রাধাকৃষ্ণের অবতার।। পয়ার ।। শ্রীদামের গমনেতে শ্রীমতী তথন। বিষম শাপের হেত বিযাদিত মন।। ভাবিয়া চিভিয়া দেবী উঠিয় সতর। ভিরি নিকট যান সভয় অন্তর।। ক মেতে শাপের কথা সকল কহিয়া। রোদন করেন দেবী শোকেতে মোহিয়।। কাতবে কহেন রাথে হরির চর ণে। মান্ঘা হইয়া ঘদি জন্মিব ভ্ৰনে।। তোমাৰিনা কি ৰূপেতে ধরিব পরাণ। ক্লংণক বিচ্ছেদে নাথ শত্যুগ জ্ঞান ৷৷ এতবলি কমলিনী করেন ক্রন্দন ৷ কহিছেন হব্নি তবে আখাস বচন ৷৷ শোকাতরা দেখিকরি প্রিয়ারাধি কায়। মুধুর বচনে প্রভু ব্ঝান ভাষায়।। বিচ্ছেদের ভায়ে প্রিয়ে নাহও কাতর। তব সহ যাবআমি অবনী ভিতর ৷৷ হরি কহিলেন যদি এতেক বচন ৷ সানন্দিত হৈল তবে রাধিকার মন।। হরিরসহিতে রাধা আনন্দি ত মনে। হইলেন অবতার আদি বৃন্দাবনে।। বৃষভানু यद्रिक क्रिन क्यानिनी। निमास्यद्र मान्यद्व व्यायान

385 मुङ्गानठावनि ॥ গৃহিণী ৷৷ রাধাছেত্ত হরিচত হন অবতার ৷ গোপবেশে ज्ञाधानइ करतन विश्वत ।। व्यथिक विश्व जात्र श्रीभ्येन। আছিল। ভারাবতারণ ছেত তাহাও হইল।। এ সব ক্ম ক্রমে সমাপণকরি ৷৷ পুন গোলোকেতে যান গো क्रक्त हिता ।। 🕸 ।। वताम कन मुनिश्न हित छ्य (य कात्र ণ; অবতার শুনিলে আখ্যান। বৃন্দাবন মাঝে হরি; পুস্থাৰূপে অবতরিঃ বেদবিধি প্রাণে প্রমাণ ৷৷ তথাপি মান্যা লীলঃ কতমতে কতথেলা কে করিতে পারে সে वर्छन । मा छ या (पिएछ भारे; किन्नू विन्छारे; भूता ণীয় কথা পরাতন।। শূন২ স্বিগণঃ পূনরপি ত্রিলোচন নারদেরে কছেন যেরূপ ।। জনমিয়া বৃন্দাবনে; রাধাছরি मुहेब्दनः (गाश्रदन विकात्रज्ञ क्रिशा मुनाश्रमादमत्रवानी রাপাক্ষ একজানিঃ প্রকৃতি পূরুষ বুক্ষময়। এই করি অভিলাষ্য পূরাওমারঅ। শার অভেদেহ পাদপদাবয়। वृन्म वरन द्राथ कृष विवार श्रेकद्रण अनम हिंद कारण लहेया जाखीतवरन लगाहातन करतन। প্রার ৷৷ একদিন বন্দাবনে নন্দ মহাশ্য় ৷ কোলে তে লইয়। সুথে জীকৃষ্ণ তনয়।। বৃন্দাবন উপ্রবনে ভাগুী व कानता (शाधनहाद्वन कवि आनिक्छ भना। उपछ রে সরোবরে গিয়া মতিমান। করাইয়া গোবৎসেরে

याम्बन्भान ।। वानरकर इक्नभानक बाहेश भरत। जाभ

नि कतिशांशान मञ्के चलता। विजिल्लन दरे मृत्ल दिन्धा

ब कार्ना (इनकाटन (मर्थ उथा चा करें) घरेन ।। गांदा বিমান্য হরি বসিয়া কোলেতে ৷ পাতিলা বিষম মায়া দেখিতেই ৷৷ আচস্থিতে আকাশেতে মেঘের উদয় ৷ মান ঝনা ৰাত বজুযোত যোর শব্দ হয়।। দূর ২ শব্দে মেঘ क्रद्रा शब्जन। खुनाकात वातिथात्र। इस वित्रिया। वृक्त शन किन्त्रं ड इहेन महावार । वष्ट वृक्षनाथा जन् हरम পড়ে।। দেথিয়া নন্দের মনে উপজিল ভয়। কি করিব कि इहेरव ভारतन छेशाय ।। नन्म वर्ष्य अ मगर्य शावद স ত্যজিয়া। গৃহ্ছতে যাইব.আমিকেমন করিয়া।। গৃহে यमि नारे यारे वाल क्त कि रूत्व। छ छ स नक है देशन क्यान युक्ति ॥ এইकाल नन्तर्याय ভाविया आवन । কোনমতে কোন দিগে নাহি পানজল ৷৷ ছেনকালে क्कारक मात्रावाडाहेन। निख उद्यायत हदा उद्याउ ভাসিল।। দৃহাতে জড়ায়ে ধরি পিতার গলেতে। মহাত্রে নরহরি লাগিলা কান্দিতো৷ তাহাদেখি नन्मरयाघ ভाবেन অপার। प्रिक करह उपस्य बाबाय প্রচার।। গোন্সলেতে আছিলেন রাধা ঠান্সরাণী। অক बाद देवन जात बाजन शतानी ॥ नर्स बखरोगि ताथ। कानिल के दिन । क्छम र भिन्दन प्रमण्डकन।। এতেক ভাবিয়ামনে পূর্বভাব স্থারি গোলোকের যেৰূপ हिल (महेक्स धित ।। (यथान यान नन्म किला नाम इति। (महेशादन हिल्लिन वाशिक मुन्मती।।

১৪৮ মৃকালভাবলি ॥

অথভান্ডীর বনে রাধিকার অংগমন।!

পয়ার ।। তদন্তরে হরির নিকটে হরিপ্রিয়।। উত্তরি ল.ধিরেং সময় পাইয়া।। নিজনৈ তাহারে হেরি নন্দ মহাশয়। অ শ্চয়্য মানিয়া হৈল পরম বিময়।। শ্রীম তার রু:প দশদিক অলোকরে। শ্রীমঞ্জের তেজেকো

টিচজ তেজহরে।। ঈশরী জানিয়া তারে জীননতথন। ভক্তিভাবে প্রণমিয়, করে নিবেদন। গলসূনি মৃথেআ

মি জানিয়াছি ভির। কমলা অধিক তমি প্রিয়াশী ছরি র ।। এই ষে বালক ময় বিষ্ণু অবতার । পরম নিগুণা চ্যুত অচিত আকার ।। জানিয়া সক্ষতত নাছি থাকে অত। আমি যে মানব কিষ্ণুমায়াবিমোছিত ।। এত

ৰলি বুজরাজ করে বহুস্ত তি। শুনিয়া তাহার বাণী বলে ন জীমতা।। শুন্থ সাবধানে ওছে মহাশয়। দেখায়ে ন এই কথা প্রশোল হয়। সংস্থার ১৯৯৪ বল

ন এই কথা পুকাশ না হয়। আমার এরপ রপ এবুজ মণ্ডলে। পাইলে দশন তমি বহু জ্যুফলে। বিফল নাহয় কল দশন আমার। অতএব ব্রমাগ যে বাঞ্চা তোমার। রাধার বচন শনি ব্জপতি কয়। দয়াকরি

বর যদি দিবেগে। আম য় ।। অন্যকোনবরে মম নাহি পুয়োজন। তোমাদের উভয়ের পদে রহে খন।। উভয় চরণে ভক্তি দৃটকরি আশ। উভয়ের নিকটেতে দেহ

सम्बाम ।। ই शिक्तिं अन्यक्ति इत् नाहि हाई । शृतिया एथा खराशी दलिएनन ताई ।। ताहेदएन दत आसि पिना শ্ব একণে। হইবে সৃদ্দ ভক্তি তোমার মননে।। পরে তে মানবদেহ ত্যজিবে ষথন। অনায়াশে গোলোকেতে করিবে গমন।। দ্বিজ কহেরামেশ্বরী দয়া প্রকাশিয়া। প্রাপ্ত শিশ্ব আশা অপালে হেরিয়া।।

কংগ সার্থন। মারণ কারতে রাধা দেখে আচামত। রজ মার রাসমঞ্চ সমঞ্চ সহিত।। কিকব তাহার শোভা প্রভা সুপ্রবল। শতং রজুকলশেতে সমজ্জল।। নানাবিধ বিভা বিত বস্ত্রে বিভূষণ।,উডিছে পতাকা তাহে অতি স্থানা ভার।। মাণিমুক্তা মাণিক্যাদি মালা থরে থরে। ্তার

মুক্তালভাবলি। स्रोद्भा किया पीछ करत्र ॥ मछ माशान मृतिशान मरक কির। জিত। জল্ম আকার মাণগণেতে মৃতিত।। মঞ্ इ विश्वित श्राम्याम्। न यदना इत । श्रम्बर् देख श्राम्या পরে গুলার ভুমর ।। এমব দেখিয়াপার ই হয়ে হরবি ভা ম ঞর ভিতরে গিয়া প্রবেশে ব্রিত।। তথায় আ क्रंत थामा प्वा मग्पय । नानाविधश्विश्च नान इति ब्राया। तज्ञास्य मृदानिङ मृनीङन बन। मुदा मद् १ स बजुडा छ इ ल इन ॥ ठा दून १ इउ ब द्व क्रू ब र निठ পারপাটি বাটিং সুগন্ধ পৃত্তিত।। দেখিয়া র ষ র ম ন व्यानक वशात । विवक्द उपर उपन म्या हात ।। व्यथ बीच जी कृत्कृत नव रंगोवन बन पणन ।। পরার ৷৷ মঞ্চের ভিতরে প্যারী হেরেন তথন ৷ পু ক্ষাণ্য্য। পরে স্থিত পূর্ণব রতন ।। শয়নে আছেন সূথে नर्स मूथवरा। कि कद रम क्रम क्रम অতি উপाদ্য।। कि [णात वस्रम किवा क्रम मत्ना इत । অভिশয় कमनो स मा म कलबर ।। कि हि कन्मर्लेड मय नावग्र भुन्मत । हन्म ণে ভূবিত অঙ্গ অতি শে,ভাকর ৷৷ পীতবস্ত্র পরিধান প্রস स नयन। भूमपुत रामा भूथ छवा १ छ वपन्।। नविन (यो वन क्षा १ न्यानय। शद्र । (क ल्या वालकनाई(मध्येष ন্তর। সর্বাধা কর্মান কর্মা তথাপি

विस्तराशत हम कात्र स नि ।। अन्य हेन्। पि ।।

অথ শীমতীর সহিত শীক্ষের কথা।

অথ রাধাকৃ ফর বিবাছ ৷৷

जपात्का तरशामाथ १ १ छन। ह छानन। ह तिः मन क्ठा हत्र- एका विधि छ। विधि। छेन्या श मयनाभ क्यां शर्यमा विद्या मिला । तुका । एका विधिन हका त हर्यन । सुन्यमा हित ते था । यम ना । छनक स्य । छान्छ छक्षा ह्या भाग मेश्रया ह अपकि १ १ १ भश् १ नः क्य वामश्र भाग छा । विधि । छन। छन्छ

225 यकानजावनि ॥ लिक्य १ शार्या लान निष्धिः। (वरमाङ नश्चमा १ वर्ष श्रोयामान माध्य । म श्राशा ताधिक। इस १ रदत्व कि नि (विष्वि । श्रीकृष व्य त्राथ। साः श्री हिम् असाश তিং। স্থারবাচ মন্তান্ত্রীণ পাঠয়ামান রাধিকাপ। পারিজান প্রসনানা মালা জালান্লবিত। পাইলিক্ফস্য गटन व्यक्त ताथायाता घटमो व्या। ताथागटन वृति याता मत्मी यान १ यत्नात्रया १। श्रुवक यानसा यान । औह तिः कमलाख्यः उषाम शास्य ताथाय मागाउः १ हित চেত্রস,। পুটাঞ্জনী প্কার্য়িজ্ব নাক্বপরাধিকা বিধিঃ। পাঠয়ামাস বেদোক্তান পঞ্চ মন্ত্র ক্ত নারদ। প্রণমস্য প্নঃকৃষ্ সমাপ্ত রাধিকাপ বিধিঃ। কন্যক ঞ্চ যথ তা (छ। ভক্তগাত ছৌ ছবেঃপূর। এত আনু ভরে (पवा: সানन श्लाकाम्ग्रः। पृक्षां वामशा याम वानक गुत्रवामिक? পারিজাত প্রস্নানাপ পূস্পাব্ ফিপচকারছ যওগন্ধপ্রব রান নৃত্ত্বাপ্সরোগণা। ভটাব শীহরিপ্রকাত্যকা চচ मिषा डः । य्वरशा "bর गरिसा छ। छ छिस्स ए हि पिक नान्। वृक्षार्गा वहन आङ्गा उभवाह रहिः सर्ना भनीस চরণান্ডোরে সৃদ্দ ভক্তি রস্ততে। মহানুশগক্তদ প্র ভবিতা নাত্র গ্রাই থবি বার বচ্ছাত্রা বিধায় অগতা मूरन। श्वामार्भ ताथ क्ष क्याम सानत मुमा।

অস্যুভ যা । বেদ বিধি মতে তাবে বিধাতাতথ্য ৷

अमधिको करिया जानिन, एठ मना। यामान श्वाद करि

মক্তালতাবলি ।।

00:

वनिष्ठिक कतिया जानिना एउ। भन् ।। আजान १ कात कतिकतिलन (श्राम। यहैमज विवादश्य विविज नि यम।। তবে १ म्मनया देश उ के वि नावायन। वार्गुव নিকটেআসি বসিততক্ষণ ৷৷ বিধির দশিত বিধি আচ রণ করি ৷ করিলেন হোমক্য সমাপণছরি ৷ সেবিবাছে বিধাতা লইল-সর্মভার। কন্যাকভাবর কলা পোরহিতা व्यात्र ।। जिनकेमा नवाया करतम र भैनानन। कन्याकेखा कारश कन्डा व्यादनम् उर्थन ॥ व्यादि व्यादम् व्यादम् व्यादम् নিয়া জীমতী। জীহরির চরণৈতে করেন প্রণতি।। সপ্ত বার প্রদক্ষিণ করি তম্ভরে। প্রকাপ প্রণাম করিল क्तिबद्र ।। व्याशनाद्र क्यनिनी देवन मण्युपान। वाश नि वाशन पारन म्कन विधान।। তবে विधि ववकन्।। छेठीरम मृद्यन। बरत्रत्र वास्माउ कन्। करत्रन ज्ञाभन। l बंदरक कन्यात भागो श्रम कदान। (वरमारक्रिक मर्ख মত্র বরেরে পড়ান ৷৷ তদান্ত কন্যার হস্তবরবক্ষে পুয়ে वत्रहरू कन्। शृष्टिपरणाञ्च द्राथित्य। जिन्यञ्च कन्। त्क প্ডান প্রজাপতি : তার পরে মালাবদলের অনুমতি ।! পারিজাত প্রশালা লইয়া তথন। কন্যাহাতে বরগলে कतान वर्गा। शृनत्रि प्रशास्त्र याना यदगात्र । (म अश्राहेन। कन्याशाल (यमननियमं। कन्यादनदात्रवारम রাথি আরবার। বরপ্রতিক্তাঞ্জলিকরায়েকন্যার।। পন

. 112011

১৫৪ মূজালতাবলি।।

र्का व शक्ति व शक्ता शक्ता व व शक्ति करतन व का विहिज्देविधाया। शिजायन कन्। कदत्र ददत्र नमर्भेग। বিধাত রাধাকে কৈলা কৃষ্ণেতে অপণা। ভজিভাবে গ্ৰহাপতি করেন গুবন ৷ ছেনক:লে স্থাপ থাকি যতসুর গণ।। অনেক দৃদ্ধভী আর মুরুজাপ্রভৃতি। বাদ্য করে অনিবার আনন্দিত মতি ৷৷ পারিভাত পুলপবৃ ি টকরে প্রন্দর। গন্ধর্কতে গীত গায় নাচয়ে অপস্র।। এখা নেতে বি খিন্ত জ করিয়া বিতার। দক্ষিণা যাচেন রাধা कृत्कत (गाठत ।। विधिवत्नं धन किष् किष्ट्र नाठाहै। উভয়ের পদেযেন দৃচভক্তি পাই ৷৷ তোমাদের উভয়ে त्र युगन চরংগ। অচলা रहेग्रा ভক্তি থাকে মনেই !! শুনিয়া বিধির বাণী জীহরি তথ্ন। তথান্ত বলিয়া পরে बलन वहन।। यमोस हद्रग स्थार्ख ममृष्ट छक्छ। व्यव ना हरे(देव सन्धवार्णाव ।। (यकाम मारेना वाहा रिश्न नमाथान। এकरण सङ्घारन खिन कहर १ ङान।। अनिविधि त्राधाकृष शरफ श्रेशियात्र। सङ्दिन श्रमनरेकन व्यानिक उर्द्या। ब्राप्त कन त्राष्ट्र, कृष्ट दिवार कथन,। ভক্তিভাবে यहेबन क्रदा धवन ।। शुनर्सात ভবে ভারে আসিতে নাহয়।। দ্বিজ কছে পর্স্তকর শিশুর আশয়।। व्यथ वियाशास्त्रं दाधाकृ कर विशत ।।

शास वृक्षा १ मात्राक्षा मिका वकाताहन। मन्

र्द्रवक मोक्षामा बीजया मूथ्रा भूवनाक्षित नर्काकी

मुकानजावनि॥ 200 কামবাণ পুপীড়িতা৷ প্রণমা আহরিপ ভক্তা জগাম नयुन् रदतः। हन्तनाखक् शक्ष वखती वक्षानित्। ननारहे जिनक पजा परमो क्षमा वक्षमा गुधार इन त्रज्ञाज मधुनुर्क भारताहत । श्रम्पो हत्य उका ৰুভুজে জগতা পাতি। তামুলঞ্বর পরম্য কপুরাদি স্বাসিত্ৰ। দুদৌ কৃঞায় সারাঞ্চ সাদর ৭ বুভুজে হরি क्थाम मिला हा बाथा हि बि पर विश्व भिष् भा ज. मूल भ তেन पञ्च व् जुरल श्वराज्य । क्रिश्वा । जा न क्ष স্থাপয়িম। প সবক্ষনি। শ্ৰারাফ বিধণকৃষ্ণ শচকার কামল প্ৰবৎ 11

व्यम् अधारा । विश्वाजा विवाह पिष्य कतिल भ्रमन । আনন্দেতে শ্রীমতির সূহান্য বদন ৷৷ বক্ত চক্ষে হরিমৃথ হেরি বার ২। লজ্জিতা হইয়া মুখ্যাকি আপনার ।। কা মবাণে প্রপীড়িতা পুলোকিত কায় । ভক্তিভাবে প্রণ भिया और तित्रभाषा। थिएतर भया काटल कतिया भमन জনুমাদি ছরি আঞ্চ করেন লেখন ৷৷ সৃতিলক সুথেদিয়া ছরির কপালে। সুধামধু পুর্জপাত্র দেনজভহলে।। রাধা पे छ मुदा मधु न हे या ज्यन। (ভा बन कितना मू थे जी नश् ममन ॥ उत्वतायान्यानि कण्तामिण्छ । इतिहाराजा ধুল তলিয়াদিল তৃষ্ঠ।। তাহাহরিস্মাদরেকরিয়া তে कन। धेनव पुवारुत्रि नहेग्राउथन।। महरखनाधादत्र एन

र्विष्ठ मदन। वाथा जारा थे देखन लिक्कि वपतन ११

200 মুক্তালত বলি।।

তদত্তে রাধারে হরিলয়ে বক্ষস্লো। অফীবিধবিছার করি ना अखरल ।। फिल करह त शहित हर्भग्राल । यखर्त्र यर्भयन्यय्भान्छाल ॥

অথবিহারাত্তে এহরি বালকরপ হইলেন।

ওত্রীমতা কোলে লইয়া যশোদার নিকটেদেন ৷ বসুব मिन् बनः गरेकरणात् क विरायक । प्रमा दालक ताथा क्रमल शीरिड १ कृषा। याम् म १ भूपरमी नन्म जीवाजी प्रमाय हुउ०। ज्र ० तृकावत्य प्रशास वना सन्दि ! যশোদায়ে শিশ্ দাত্র্দ্যতা সেতাবাচহ। গৃহীত্বৈ मिन् इन के रहक कृष उद्र । (शाष्ट्र उद साभीना पखू প্রাপ্তাতি যাতন, ময়া। দ • সিক্ত ° বদন ৽ ব্টে মেষা

ছाয় ভিদ্ দলে।। পি ফ্লে দৃগ মেদেকে যশদেবত মক্ষমা পৃহাণ বালক ভদে, ত্তনত দত্বা প্রবোধয় । পৃহত চিরত পরিত্যকত্ত'যা ম. ৪ স্থ'- নতা ৷ ইত্যক্তা বালক দত্বা

ৰুগাম স্বতাহ°নতী। যশোদাবালক•নিত্বা চু,চুম্বচন্তৰ• দদৌ। অন্যভাষা। বিহারান্তে যুব রুপ ত্যাল ততক্ষণ পুনরপিশিশ রুণ হৈল৷ নারায়ণ 11 রাধিকাদেখেননন্দ

দিলেন সেক্সাকোন্দিভজ্ দিভভীত বালক দেরুপা।তবে ভশীমতাসেইশিশু হরিলয়ে ৷ চলিলেন দুতগতি নন্দে द्रानाय ।। अभिकादि छेनी ने जनस्त्र खरन। याना ए द

रकारनिक करतन्वर्भ ।। यथन बी इतिएन यत्कामात कारन। विभागीयतन किए स्मध्त वारन। भन ला यानामाञ्ज्यस्था सहामां । (गार्ष्ठ पित्न त्यादा जात्र जनस्य। यानित्व भरणान वर्षम्थ भाहेसाहि। कहित्व ना भाति जाना त्यताभ अत्मि । त्या छ त्य स्थात भर्थ भिष्ठित वृथ्छित्व। यानिक वाभिति वाभाति । त्या छ त्य स्थात भर्थ भिष्ठित वृथ्छित्व। यानिक वाभाति विद्याला । वहे वानिम् विद्याला । वहे वानिम् खन पिसामा । वहे वानिम् खन पिसामा । वहे वानिम् वाभित्र वहं । वहे वानिम् खन पिसामा । वहं वानिसा निष्या वहं यानिसा विवाद वाभाव वहं यानिसा विवाद वाभाव वहं यानिसा विवाद वाभाव वहं यानिसा वहं

ত্রিপদী ।। ব্যাস কন মূনি গণেঃ তদবধি বৃন্দার
নেংরাধাক্ষ্ হইল মিলন । উভয়ত প্রমাবেশ্যে নিত্য
লীলানবরনেং কতকব তালারকথন ।। কিঞ্চিত্র তারপ্র
কেতে বলেছি সারঃআরকিশুনিতে বাঞ্ছাকর । শুনি মনি
গণ কয়ং যে কহিলে মহাশয় তৃপ্ত হৈল সবার অন্তর ।।
কিন্তু এক নিবেদনং মৃক্ত বন বিবরণং প্রেতে যে কলি
লাআপিনি । রাধিক রে রোধ করিঃ মৃক্তালতা সূর্ফি
করি মৃক্তাফ নাইলা চক্রপাণি ।। যারম্ভনেও রাব সতীঃ
হয়ে ছিলা ব্যুম্ভিং কৃষ্ণকত মায়াদেখাইলা। কহ কল
ভিপোধন কি হইল ঘেইবন পূন কিবা তাহাতে করিলা।

ग्ङान्डावन ॥ 338 হাসিয়া কহেন ব্যাস;শুনহ তাহার ভাষামৃকাবলিকথা मुकाशात । এकपिनशृष्टं मानोश्निष्टि उपत्र मणि क्ष ৰদিল প্ৰে তরাধার।। রাধিকা বনিয়া কাছে;চারিদিপে नथी बाह् बदन थम तदन्छ बादन । एन क,दन नद्र ह दिन्द्रायादत अत्पद्र किन्द्रिः नजनाट्यक्तद्रपनद्वण ।। आह ष्या (कष्वानः (वःक्रामनानन्यनानः निन्त्रं नियल्केना च न। भरत नाम चलताः भताहेना नाताम राजाक যেমা নাজেভাল । তারপরে আরবার হাতে লয়ে মৃকা হার ভালে দিয়া রাধিকারগলে। সাজায়ে মোহিনী সা ক আপনি রহিকরাজনির থিয়া ভালভাল বলে। মুক্তা হারপত্তাইতেম্ভাবনকথাচিতেউঠিয়ারাধারনামহৈল মনের মানস্থাতা প্রকাশ নাকরে তাহাছিছি বলি । ছिডि রা ফেলিন ।। উপজিল অতি দৃঃথ মলীন बहेन म्थ छ व पिथि व बिया श्री हति। कारत किछ नाव नियो भारनरे विष्ठातिया जे किलन बाबा करख पति ।। नरक লহচরীগণ ভূমণ করিয়া বন্য ক্রেক্ষে গেল মুল্তা বনে। তাছাদেখি রাধানতী অধিকত্ত মানব্তী ছরি ভাচা জ নিলেন মনে ৷৷ পরিয়া রাধার হাতে ভবিয়া অনেক মতে মান তার করিয়া ভপ্তন। মৃক্তার অলক্ষর

মুক্তার গা থয়া হার প্রমতীরে পরান তথন। যত

সহচরী গণে মৃক্তাময় অভরণে জালাইয়া দিয়ে সেই জনে ৷ আপনি সাভিয়া রকে রাম্বারে লইয়া সঙ্গে বনি লেন : জু দিপ্ছাসনে।। মারি কিঘুগল রূপ ত্রিভ্রনে সে অন্প অপর্কপ অতি মনোহর।যে রুপ দেখিতে সবে बहानसं यरहा ९ मरव मुकायरन छेतिन समत।। छि म्या প্রসাদ যলে রাধাকৃষ্ণ পদতলে অধিনেরে দেহ এইবর শিসু নম হয়ে ক ক চাছিয়া করণা দৃষ্টে জশলে রাখাই निद्रस्त ।।

वक्ताध क्षित गुगन कृष दर्धन।।

চৌপদক্ষ ॥ কি শোতা সুন্দর কিশোর কিশোর শিংহাসনোপার বাসল বোগো চামরাদি ধরি চারু नक्ति काति फिल्म (यती (भवा निर्यार्थ ।। जुल मत्ना ছর শ্যাম কলেবর নব অলখন চাতক লোভা। প্রীমতী বরণ তাহে স্ঘটন জীমতে যেমন বিজলি শোভা 11 শ্যাম শিরে পরে শিথিপুচ্ছ্ ধরে কভো শোভা করে তার ছটায়। রাধ। শিরে বেণী জিনি ক লফণি অগুলি নামণিভ্ৰিভাতীয় ৷৷ সুন্দর সিন্দর বিন্দর অরুণই ব্দর ফলক ভরে। কিশোরিকপাল করিয়াছেআল শ্যাম ভালে ভাল ভিলকপরে ।। खीमथ मधन উভয়উজ্জন निवद्रक ६ शनकिनियाष्ठी।। नय्य गृशन जारं ज्था বলাসম শতদৰ প্ৰফুলঘটা।। ভ্ৰণ সমান কামের কৃপাণ কট ক্ল সেৱাণ যে জন প্রায় । যেল ফ্লধনধরিরা অতন্ দেছোর তন্ হানিছেতায়। সূধাময় ভ.য অধরে সহাস তলোকরে নাশ তত্তি জিনি ৷ স্জাময় হার

ম না অলস্কার অঙ্গেতে দোহাও ভূবিত মণি। পরিধান बारम बीबी, नी वारम नोन शीउ वारम मुन्द्र मार्ख। कि बारम म्मत क छेटल यक्त यस्त मशृत भएम वितारक।। পাছ প্রতল দোহার পুরল সরক্ত উৎপল উজ্জল ৪ ম म्तिकिमद्रक्ष (हिद्रश्रोधन द्रक छक्छ भरना ज्र्स एक्षाद जाय ।। म्लादन यात्य अक्ष विदारक (पश्चित.रत मार्टक मिवला प्रति । विधि चापि जित दक्ति वास्त्र प्रति प्रति । विधि चापि जित दक्ति वास्त्र प्रति । विधि चापि जित वास्त्र वास्त्र प्रति । विधि चापि जित वास्त्र वा দেব অংইল তবে। আসি মূক্তাবন বিধাতা তথ্ন যুগল ৰরণ দশ্ন করি। সহসূরগণৈ তলসা চলনে পুভিয়া য তনে কিশোরি হরি ৷৷ পূজা সমপিয়ে কৃতাঞ্জলি হয়ে खनन कतरम क हिंद कछ।। : ब्राधाकृषः छ म हहेस। समस দেনবরত য় বাঞ্চিত মত ৷৷ ছেনমতে ছরি; রাধা সঞ্চে করি; বঞ্জিনা সর্বরাঃ বজাবনে। নিশি অবসানে; যে यात ख्वरनः (शला नबेहरनः मख्य मर्न । वृशमरम्ब कनः खनमूनिशनः देशन मृङावनः विलातञ्चान । পूनरेष्ठा मयः हेक्क् यद्य इस अह अथा हसः उथा स सन । निश्चा দি বনঃ নিজ্ঞা কাননঃ বিছারের স্থানঃ কৃষ্ণের যত। তাহাতে প্রাধানঃ হইল গণনঃ স্থান মুক্রাব্ন: মনের মত কিন্তু যবে হরিঃ গেলা মধুপুরীঃ সেবন সপ্তারিঃ করিলা বন ৷ এতেক বচনঃ শুনিয়া তথনঃ যতপাৰিগণ সন্তেষ

यन ।। এই ग इनाइ म् जित्र वाषा द्वर्थ छान जाहा दः

कन्यनारम । धनशृज हयः हेर्काल र्यः च छनिद्नयः

विक्त वरम यपि कान जैनः विवित्र कात्रनः कतिराज्ञा का অণ্ট হয়। করিয়া ষতনং গৃহেতে ছাপনং করিলে সে बन्धार्मिक शाय ।। दक्षा वापि नातिः पृष्ठिक केंद्रि তিনপক্ষ ধরিঃশ্রবণ করে। পুএবতী হয়ঃ সৌভাগ্য উদ यः श्रात शिक्षियां । रित वदत ।। श्रीपृथोधनारमः ग्रान ब बाह्नादमः बाध। कृषः शदमःयाष्ट्य नात । दिया शम তরীং হইয়াকা তারিও ভবষোর বারিও করছ পার ॥

অথ গুস্থকারের পরিচয় ওভাষা বিবরণ। পয়ার। কলিকাতারাজধানী বিদিত স্পার পরগণে रमममञ्ज पक्षित्व जारात्र ।। शिक्ष्यवारिनीत श्रेस वन् সে অদুরত। রামচত্র পূর নামে গাম সূবিখ্যাত ॥সেই পামে নিবসতি আছে দিন হয়। প্রীরামশকর বাচস্পতি মহাশয়।। নর্ম শাল্পে দুপারগ স্পত্তিভত্ত । শীদৃগা প্রসাদ্ধিজতাহার সন্ততি ৷৷ সর্বশাস্ত্র ব্যবসায় করি অকপটে ৷ পুরাণ প্রসঞ্করি ভক্তের নিকটে ৷৷ ১ শক্ত বুঝিতে সুকলে হয় ভার ৷ এইছেত নিলমনে করিয়াবি চার ।। বছবিধব্ধনহ মন্ত্রণা করিয়া। সাধারণজনগণে

রুহিতেরুলাপিয়া।। মূকালতাবলি ভাষা কতিনু রচন। অনায়াদে বুঝিতে পারিবৈ সর্মন্তন ।। পণ্ডিতের বোধ হেত কোন । যুতুকরি লিথিয়াছি মুলেরপ্রমাণ।।

নীমভাগে ভাষাতার আছরে বিস্তার । জ্টক্রে দেখি 113711] .

তিই

শ্বিলালতাবলি।।

বৈন যে বাসনাযার ।। এই ভিন্নল চাই গুণিগণ সমিধানে
রচনে যদ্যপি দোব থাকে কোন স্থানো। সেদোল ঠাজি
রা কর গুণের গৃহণ। হৎন সম নারত্য জি কীরের ভ
কণ ।। রাধাক্ক পাদপলেঅনভাপ্রণাম । কটাক্ষ করিয়া
পুর্ভকর মনস্কাম ।। শিশুমম হরেক্ক শ্যামচরণেরে।
নিরাপদ করিয়া রাথহ নিরন্তরে ।। প্রীদৃগাপুসাদ
ভিজ করিল রচন। হরিই বলমবে গুলু স্মাপণ ।।
সমাপ্ত শ্চায়ৎ গুলুই ।।

यां जा निवस्तास यह रेन इस । शिक्षानाया का का को है। स्टॉन स्था नेले का एन स्थायन जना अस्म है। देशक

है जान वह है है। यह वह जान ता के बान ता के कह मान है पर्य के कि है। है जो के बाद के बाद के कि का में कि के कि का कि कि कि कि कि कि कि कि का कि

हैं किटज हमा है जिसे हो है। प्रकृति है अपि का वे निक्त है जिस । वा एका का नारक भारति है जैसन से आधिक स्थाप

र्रे व क्षिप्र होते । एवं निविधिया व में निविधिया ।

में बर्ज रेक में जाने का बार किया । / एक स्वा अंतर